





## परभावना

इस कथन का नाम भवति परावृत्ति (योग साधन की विधि) है क्योंकि इसका परवर्तन 'द्रव्यानुयोग बोधितम्' है। इसका अर्थ, प्रमाण, प्रमाण, प्रमाण, प्रमाण और नय साधन का कथन है। द्रव्यानुयोग की व्याख्या में पूर्ण व्याख्यापद्धति का ज्ञान होना परवर्तन आवश्यक है, क्योंकि इसका अर्थ द्रव्यानुयोग में प्रवेश तथा उसका अर्थान्वय बोध, नहीं हो सकता है।

मूल नय यह है—निश्चयनय और व्यावहारिक, जैसा कि इसी कथन में गाथा ४ में कहा है—

‘णिच्छयव्यवहारणया मूलमभेदा गगणमन्त्राणां ।’

भेद प्रतिभेदों की अपेक्षा न रक्कड़ द्रव्यानुयोग में प्रायः निश्चय व व्यवहार ऐसे दो नयों का उत्कर्ष पाया जाता है। उपचरित-प्रसद्भूत व्यवहार नय की दृष्टि में एक जीव दूसरे जीव को मारता है, मुसी दुसी करता है किन्तु अनुपचरित-प्रसद्भूत-व्यवहारनय की दृष्टि में अपने कर्म ही जीव को मुसी-दुसी करते हैं या मारते हैं। ममयसार कलश १६८ में कहा भी है—

‘सर्वं सदैव नियतं भवति स्वकीयकर्मोदयान्मरणजीवितदुःखमौख्यम् ।’

अर्थात् इस जगत में जीवों के मरण, जीवन, दुःख, सुख, मय नदैव नियम से (निश्चय से) अपने कर्मोदय से होता है। यह कथन यद्यपि अनुपचरित-प्रसद्भूत-व्यवहारनय की दृष्टि से है तथापि उपचरित-प्रसद्भूत-व्यवहारनय की अपेक्षा से इसको निश्चय कहा गया है।

प्रसद्भूत व्यवहारनय की अपेक्षा से सदभूत व्यवहारनय को निश्चय कहा गया है—

व्यवहारस्स दु आदा पुगलकम्मं करेइ शोयविहं ।

तं चेव पुणो वेयइ पुगलकम्मं अशोयविहं ॥८४॥

णिच्छयणयस्स एवं आदा अप्पाणमेव हि करेदि ।

वेदयदि पुणो तं चेव जाणं अत्ता दु अत्ताणं ॥८३॥ [ समय० ]

一、本行自成立以來，承蒙各界愛護，業務蒸蒸日上。茲為擴大服務，特在各地增設分行，以便利顧客。凡有存款、放款、匯兌等項，無不竭誠服務，收費低廉。

[illegible]

一、政治思想：政治思想是政治行为的先导，是政治行为的灵魂。政治思想决定着政治行为的性质、方向、方式和结果。政治思想是政治行为的先导，是政治行为的灵魂。政治思想决定着政治行为的性质、方向、方式和结果。

一、《说文解字》：许慎著，系统分析汉字字形、字义、字音的著作。  
 二、《康熙字典》：张玉书、李紱主编，清代最大的官修字典。  
 三、《辞源》：陆尔昌主编，中国第一部大型综合性辞书。  
 四、《辞海》：舒新城主编，中国最大的综合性辞书。  
 五、《新华大字典》：商务印书馆出版，现代汉语大型辞书。  
 六、《现代汉语词典》：商务印书馆出版，现代汉语规范词典。  
 七、《汉语大词典》：商务印书馆出版，中国最大的汉语辞书。  
 八、《汉语大百科全书》：商务印书馆出版，中国最大的百科全书。  
 九、《汉语大辞典》：商务印书馆出版，中国最大的汉语辞书。  
 十、《汉语大词典》：商务印书馆出版，中国最大的汉语辞书。

[illegible][illegible][illegible]

*[Handwritten notes in cursive script]*





जयश्रीका सभी महाप्रभासों की सहायता व सहयोग व प्रति में प्रति  
साधारण रूप से किया है ।

उम मन्द के अनुवाद व टीका का कार्य सन् १९५७ ई० में पूर्ण  
हो चुका था किन्तु प्रेम की साक्षात् व हो जाने के कारण उमका प्रकाशन न  
हो सका । सन् १९५९ ई० में भाद्रपद मास के दशमिष्ठमी पर मैं  
मेरठ गहर रहता हूँ । तब श्री रतनचन्द जैन एम. कॉम. (गुरु ज्ञान  
महावीरप्रसाद जैन मोटर गाड़ी) ने मुद्रण का भार ले लिया । उनके साथ  
प्रेम के सम्बन्ध कर्मचारियों के सहयोग के फलस्वरूप उमका मुद्रण हो गया ।  
मैं उक्त श्री रतनचन्द आदि का भी बहुत आभारी हूँ ।

मैं मन्द बुद्धि हूँ, यदि कहीं पर अनुवाद आदि में कोई असुद्धि रह गई  
हो तो बिहान उमको सुद्ध करने की धीर मुक्तों क्षमा करने की कृपा करें ।

सहारनपुर

वीर निर्वाण दिवस संवत् २४६७

—रतनचन्द जैन, मुख्तार



# विषय-सूची

पृष्ठ संख्या	विषय	पृष्ठ-संख्या	पृष्ठ-संख्या
(आगत १)	समाचार-संग्रह (विषय की विविधता)	१	१६
	समाचार, विविधता, देश, विविधता, समाचार, समाचार		१६
१	समाचार-संग्रह की विविधता	१	१७
२	समाचार-संग्रह की विविधता	१	१८
३-४	समाचार की विविधता (विषय की विविधता)	३	१९-२०
	समाचार, समाचार की विविधता (विषय की विविधता)		१९

## समाचार-संग्रह

पृष्ठ-संख्या १९-२०

१	समाचार की विविधता	१९
२	समाचार की विविधता (विषय की विविधता)	२०
३	समाचार की विविधता (विषय की विविधता)	२१
	समाचार, समाचार, समाचार की विविधता (विषय की विविधता)	२२
४	समाचार, समाचार, समाचार की विविधता (विषय की विविधता)	२३

## समाचार-संग्रह

पृष्ठ-संख्या २३-२४

१	समाचार की विविधता (विषय की विविधता)	२३
२	समाचार की विविधता (विषय की विविधता)	२४
३	समाचार की विविधता (विषय की विविधता)	२५
४	समाचार की विविधता (विषय की विविधता)	२६
५	समाचार की विविधता (विषय की विविधता)	२७
६	समाचार की विविधता (विषय की विविधता)	२८
७	समाचार की विविधता (विषय की विविधता)	२९
८	समाचार की विविधता (विषय की विविधता)	३०



२३	पुद्गल के १३ स्वभाव का कथन	३	३
२४	पुद्गल के विभिन्न गुण का कथन	३	३
२५	पुद्गल के १३ स्वभाव का कथन	३	३
२६	पुद्गल के १३ स्वभाव का कथन	३	३
(गाथा १)	धर्मादि परिमाण स्वभाव होता धर्मो विद्यमानो रहति है ७	३	३
	द्वयार्थक नय से द्रव्य विद्यमान है, धर्माधारित नय से	३	३
	द्रव्य अविद्यमान है	३	३
(गाथा २)	धर्मादि नारा द्रव्यों में मान धर्म पदार्थों होती है	३	३
	किन्तु जीव, पुद्गल में धर्मका वर्णन भी होती है	३	३
	विद्या-विनिर्वाह प्रसार व विविध द्रव्य में वर्णन	३	३

## स्वभाव-अधिकार

७-६ ७२-७

२७	द्रव्य का लक्षण, गुण व वर्णन का लक्षण;		
	द्रव्य के नीचों लक्षणों में प्रसार नहीं है	७	७
२८	नामान्य व विशेष स्वभाव व उनका स्वभाव	७	७
	स्वभाव व गुण में प्रसार	७	७
२९	जीव व पुद्गल में २१ स्वभाव की गिद्धि	८	७
	जीव में अचेतनत्व व मूर्तत्व की गिद्धि तथा		
	पुद्गल में चेतनत्व व अमूर्तत्व की गिद्धि	७६-७	
३०	धर्मादि द्रव्यों में १६ स्वभाव	८	७
३१	काल में १५ स्वभाव	८	८
(गाथा ३)	जीव आदि द्रव्यों में स्वभावों का कथन	८	८

## प्रमाण-अधिकार

१० ८१-८

३२	प्रमाण व नय से २१ स्वभाव जाने जाते हैं	१०	८
----	--	----	---



४८	उत्पाद-व्यय को गौण करके मत्ता को ग्रहण करने वाला शुद्ध-द्रव्याधिक नय	११	१०५
४९	भेदकल्पनानिरपेक्ष शुद्ध-द्रव्याधिक नय	१२	१०६
५०	कर्मोपाधिसापेक्ष अशुद्ध-द्रव्याधिक नय	१२	१०७
५१	उत्पादव्ययसापेक्ष अशुद्ध-द्रव्याधिक नय	१२	१०७
५२	भेदकल्पनासापेक्ष अशुद्ध-द्रव्याधिक नय	१२	१०८
५३	अन्वयसापेक्ष द्रव्याधिक नय	१२	१०९
५४	स्वद्रव्यादिग्राहक द्रव्याधिक नय	१२	१०९
५५	परद्रव्यादिग्राहक द्रव्याधिक नय	१२	११०
५६	परमभावग्राहक द्रव्याधिक नय	१२	१११
५८	अनादि-नित्य पर्यायाधिक नय	१३	११२
५९	सादिनित्य पर्यायाधिक नय	१३	११३
	क्षायिकभाव सादि-नित्य है		११४
६०	अनित्य-शुद्ध पर्यायाधिक नय	१३	११५
६१	नित्य-अशुद्ध पर्यायाधिक नय	१३	११५
६२	नित्य-शुद्ध पर्यायाधिक नय	१३	११६
६३	अनित्य-अशुद्ध पर्यायाधिक नय	१३	११७
६४-६७	भूत-मावि-वर्तमान नैगम नय	१३-१४	११८-१२२
६८-७०	सामान्य-विशेष संग्रह नय	१४	१२२-१२३
७१-७२	दो प्रकार व्यवहार नय	१५	१२४
७३-७५	दो प्रकार ऋजुमूत्र नय	१५	१२६
७६-७९	शब्द, सममिच्छा, एवंभूत नय	१५	१२८-१३०
८२	शुद्ध-सद्भूत-व्यवहार नय	१६	१३१
८३	अशुद्ध-सद्भूत-व्यवहार नय	१६	१३१
८५	स्वजात्यसद्भूत-व्यवहार नय	१६	१३३
८६	विजात्यसद्भूत-व्यवहार नय	१६	१३३
८७	स्वजातिविजात्यसद्भूत-व्यवहार नय	१६	१३४
८८	उपचरित-असद्भूत-व्यवहार नय	१६	१३५



































दीपोत्सवदिने श्री वर्द्धमानस्वागी मोक्षं गतः ॥६५॥

टिप्पण—अतीते—अतीतकाले । आरोपणं—संस्थापनं ।

भाविनि भूतवत्कथनं यत्र स भाविनैगमो यथा अर्हन्

सिद्ध एव ॥६६॥

टिप्पण—भाविनि भविष्यति पदार्थे । भूतवत्=भूतेन तुल्यं ।  
अर्हन्=इन्द्रादिकृतामनन्यसंभाविनीं गर्भावतरणं जन्माभिपेक्षं निष्कर्म  
केवलज्ञानोत्पत्तिं निर्वाणाभिधानपंचमहाकल्याणरूपां अर्हणं पूजां  
अर्हति योग्यो भवतीति अर्हन् । सिद्धः=सिद्धिः स्वात्मोपलब्धिः  
संजाता अस्तेति सिद्धः, किञ्चिदूनचरमशरीराकारेण गत सियथक मूपा-  
गर्भाकारवत् छायाप्रतिमावत् पुरुषाकारः सिद्धः । अंजनसिद्ध पादुका-  
सिद्ध गुटिकासिद्ध खड्गसिद्ध मायासिद्धादि लौकिक विलक्षण  
केवलज्ञानाद्यनंतगुणव्यक्तिलक्षणः सिद्धः । यः अर्हन् स सिद्ध एवेति  
भविष्यति पदार्थे भूतवत्कथनं भाविनैगमः ।

कर्तुं मारब्धमीषन्निष्पन्नमनिष्पन्नं वा वस्तु निष्पन्नवत्  
कथ्यते यत्र स वर्तमाननैगमो यथा ओदनः पच्यते ॥६७॥

॥ इति नैगमह्येधा ॥

संग्रहो द्वेधाः ॥६८॥

सामान्यसङ्ग्रहो यथा सर्वाणि द्रव्याणि परस्परम-  
विरोधीनि ॥६९॥

विशेषसङ्ग्रहो यथा सर्वे जीवाः परस्परमविरोधिनः ॥७०॥

॥ इति सङ्ग्रहो द्विधा ॥

१. केचित्पुण्ड्र—अतीतवर्तमान, वर्तमानातीत, अनागतवर्तमाना, वर्तमाना-  
नागता, अनागतातीत, अतीतानागत । देखो दिल्ली की प्रति नं० ३१/१०४ ।



[illegible]

$\frac{1}{\sqrt{\pi}} \int_{-\infty}^{\infty} f(x) \delta(x-a) dx = f(a)$

समस्तस्यैव तत्त्वस्य च तद्विभक्त्योऽयमव्यक्तात्मिका

॥ श्री-गणेशाय नमः ॥

स्वजात्यमार्भुजव्यवसाये यथा पट्टमास्य, त्रिप्रदेशीय कथम्-

विजात्यसद्भूतव्यवहारो यथा मूर्तिं मनिजानं यतो मूर्तिं  
द्रव्येण जनितम् ॥८६॥

स्वजातिविजात्यसद्भूतव्यवहारे यथा ज्ञेये जीवेऽजीवे  
ज्ञानमिति कथनं ज्ञानस्य विषयान् ॥८७॥

॥ इत्यगदभूतव्यवहारस्येधा ॥

स्वजात्युपचरितासद्भूतव्यवहारो यथा पुत्रदारादि  
॥५६॥

१. 'दाराद्यहं मम वा' इति पाठांतरं [बुद्धी की प्रति में] ।





**enfermedades:**

संस्कृत-संज्ञा-सूची

DATE: 11/2/77

[illegible][illegible]

**SECRET**

SECRET

[illegible]

**आचार्य श्री अरविन्द**

我們說，新民主主義一定能够成功。

[illegible]

1954年12月

1. 1940-1941

一、政治  
 二、經濟  
 三、文化  
 四、教育  
 五、社會  
 六、宗教  
 七、藝術  
 八、科學  
 九、法律  
 十、軍事  
 十一、外交  
 十二、內政  
 十三、財政  
 十四、稅收  
 十五、金融  
 十六、貿易  
 十七、工業  
 十八、農業  
 十九、交通  
 二十、通訊  
 二十一、郵政  
 二十二、電報  
 二十三、電話  
 二十四、無線電  
 二十五、電影  
 二十六、戲劇  
 二十七、音樂  
 二十八、美術  
 二十九、體育  
 三十、衛生  
 三十一、醫藥  
 三十二、牙科  
 三十三、眼科  
 三十四、耳鼻喉科  
 三十五、皮膚科  
 三十六、泌尿科  
 三十七、婦產科  
 三十八、小兒科  
 三十九、外科  
 四十、內科  
 四十一、神經科  
 四十二、精神科  
 四十三、心理學  
 四十四、社會學  
 四十五、人類學  
 四十六、地理學  
 四十七、歷史學  
 四十八、哲學  
 四十九、倫理學  
 五十、法學  
 五十一、政治學  
 五十二、經濟學  
 五十三、社會學  
 五十四、人類學  
 五十五、地理學  
 五十六、歷史學  
 五十七、哲學  
 五十八、倫理學  
 五十九、法學  
 六十、政治學  
 六十一、經濟學  
 六十二、社會學  
 六十三、人類學  
 六十四、地理學  
 六十五、歷史學  
 六十六、哲學  
 六十七、倫理學  
 六十八、法學  
 六十九、政治學  
 七十、經濟學  
 七十一、社會學  
 七十二、人類學  
 七十三、地理學  
 七十四、歷史學  
 七十五、哲學  
 七十六、倫理學  
 七十七、法學  
 七十八、政治學  
 七十九、經濟學  
 八十、社會學  
 八十一、人類學  
 八十二、地理學  
 八十三、歷史學  
 八十四、哲學  
 八十五、倫理學  
 八十六、法學  
 八十七、政治學  
 八十八、經濟學  
 八十九、社會學  
 九十、人類學  
 九十一、地理學  
 九十二、歷史學  
 九十三、哲學  
 九十四、倫理學  
 九十五、法學  
 九十六、政治學  
 九十七、經濟學  
 九十八、社會學  
 九十九、人類學  
 一百、地理學  
 一百零一、歷史學  
 一百零二、哲學  
 一百零三、倫理學  
 一百零四、法學  
 一百零五、政治學  
 一百零六、經濟學  
 一百零七、社會學  
 一百零八、人類學  
 一百零九、地理學  
 一百一十、歷史學  
 一百一十一、哲學  
 一百一十二、倫理學  
 一百一十三、法學  
 一百一十四、政治學  
 一百一十五、經濟學  
 一百一十六、社會學  
 一百一十七、人類學  
 一百一十八、地理學  
 一百一十九、歷史學  
 一百二十、哲學  
 一百二十一、倫理學  
 一百二十二、法學  
 一百二十三、政治學  
 一百二十四、經濟學  
 一百二十五、社會學  
 一百二十六、人類學  
 一百二十七、地理學  
 一百二十八、歷史學  
 一百二十九、哲學  
 一百三十、倫理學  
 一百三十一、法學  
 一百三十二、政治學  
 一百三十三、經濟學  
 一百三十四、社會學  
 一百三十五、人類學  
 一百三十六、地理學  
 一百三十七、歷史學  
 一百三十八、哲學  
 一百三十九、倫理學  
 一百四十、法學  
 一百四十一、政治學  
 一百四十二、經濟學  
 一百四十三、社會學  
 一百四十四、人類學  
 一百四十五、地理學  
 一百四十六、歷史學  
 一百四十七、哲學  
 一百四十八、倫理學  
 一百四十九、法學  
 一百五十、政治學  
 一百五十一、經濟學  
 一百五十二、社會學  
 一百五十三、人類學  
 一百五十四、地理學  
 一百五十五、歷史學  
 一百五十六、哲學  
 一百五十七、倫理學  
 一百五十八、法學  
 一百五十九、政治學  
 一百六十、經濟學  
 一百六十一、社會學  
 一百六十二、人類學  
 一百六十三、地理學  
 一百六十四、歷史學  
 一百六十五、哲學  
 一百六十六、倫理學  
 一百六十七、法學  
 一百六十八、政治學  
 一百六十九、經濟學  
 一百七十、社會學  
 一百七十一、人類學  
 一百七十二、地理學  
 一百七十三、歷史學  
 一百七十四、哲學  
 一百七十五、倫理學  
 一百七十六、法學  
 一百七十七、政治學  
 一百七十八、經濟學  
 一百七十九、社會學  
 一百八十、人類學  
 一百八十一、地理學  
 一百八十二、歷史學  
 一百八十三、哲學  
 一百八十四、倫理學  
 一百八十五、法學  
 一百八十六、政治學  
 一百八十七、經濟學  
 一百八十八、社會學  
 一百八十九、人類學  
 一百九十、地理學  
 一百九十一、歷史學  
 一百九十二、哲學  
 一百九十三、倫理學  
 一百九十四、法學  
 一百九十五、政治學  
 一百九十六、經濟學  
 一百九十七、社會學  
 一百九十八、人類學  
 一百九十九、地理學  
 二百、歷史學  
 二百零一、哲學  
 二百零二、倫理學  
 二百零三、法學  
 二百零四、政治學  
 二百零五、經濟學  
 二百零六、社會學  
 二百零七、人類學  
 二百零八、地理學  
 二百零九、歷史學  
 二百一十、哲學  
 二百一十一、倫理學  
 二百一十二、法學  
 二百一十三、政治學  
 二百一十四、經濟學  
 二百一十五、社會學  
 二百一十六、人類學  
 二百一十七、地理學  
 二百一十八、歷史學  
 二百一十九、哲學  
 二百二十、倫理學  
 二百二十一、法學  
 二百二十二、政治學  
 二百二十三、經濟學  
 二百二十四、社會學  
 二百二十五、人類學  
 二百二十六、地理學  
 二百二十七、歷史學  
 二百二十八、哲學  
 二百二十九、倫理學  
 二百三十、法學  
 二百三十一、政治學  
 二百三十二、經濟學  
 二百三十三、社會學  
 二百三十四、人類學  
 二百三十五、地理學  
 二百三十六、歷史學  
 二百三十七、哲學  
 二百三十八、倫理學  
 二百三十九、法學  
 二百四十、政治學  
 二百四十一、經濟學  
 二百四十二、社會學  
 二百四十三、人類學  
 二百四十四、地理學  
 二百四十五、歷史學  
 二百四十六、哲學  
 二百四十七、倫理學  
 二百四十八、法學  
 二百四十九、政治學  
 二百五十、經濟學  
 二百五十一、社會學  
 二百五十二、人類學  
 二百五十三、地理學

[illegible][illegible]

姓名: 王德林 性别: 男 年龄: 45 民族: 汉族  
 籍贯: 山东省潍坊市 职业: 教师  
 学历: 本科 学位: 学士  
 工作单位: 潍坊市第一中学  
 联系电话: 0536-2345678  
 电子邮箱: wangdelin@163.com

**THE UNIVERSITY OF CHICAGO**

一、本行自成立以來，承蒙各界愛護，業務日見發達，茲為擴大服務起見，特在  
 本市設立分行，凡我僑胞，如有存款、放款、匯兌、儲蓄等項，請向本分行接洽，定當竭誠服務，  
 以期便利。此致  
 僑胞鑒  
 中華民國三十四年五月一日  
 本行經理人 張道藩 啟

[illegible]



द्रव्याख्या निर्गुणा गुणाः इति लक्षणभेदः । द्रव्येण लोकमानं क्रिये  
गुणेन द्रव्यं द्वायते, इति प्रयोजन भेदः । यथा जीवद्रव्यस्य जीव  
इति संज्ञा । ज्ञानगुणस्य ज्ञानमिति संज्ञा । चतुर्भिप्रायोः जीव  
जीविष्यति अजीवितिति जीवद्रव्यलक्षणं । द्वायते पदार्थं अनेन  
ज्ञानमिति ज्ञानगुणलक्षणं । जीवद्रव्यस्य वंशमोक्षादिपर्यायेरविनाश  
हरेणदरिणमनं प्रयोजनं । ज्ञानगुणस्य पुनः पदार्थपरिच्छिन्निति मातृ  
प्रयोजनं इति संक्षेपेण ।

गुणगुणानां कस्वभावादभेदस्वभावः ॥११३॥

भाति कानि परस्वभावाकारभवनान्द्रव्यस्वभावः ॥११४॥

भाति कानि परस्वभावाकारभवनान्द्रव्यस्वभावः ॥११५॥

॥११६॥

अणमणं पनियंता दिना उगमासमणमणमणस्य ।

म ॥११७॥ य य गि वं य गगमभावं ग विजर्तनि ॥११८॥

म ॥११९॥ य य गि वं य गगमभावं ग विजर्तनि ॥११२०॥

म ॥१२१॥ य य गि वं य गगमभावं ग विजर्तनि ॥१२२॥

म ॥१२३॥ य य गि वं य गगमभावं ग विजर्तनि ॥१२४॥

•

म ॥१२५॥ य य गि वं य गगमभावं ग विजर्तनि ॥१२६॥

म ॥१२७॥ य य गि वं य गगमभावं ग विजर्तनि ॥१२८॥

म ॥१२९॥ य य गि वं य गगमभावं ग विजर्तनि ॥१३०॥

म ॥१३१॥ य य गि वं य गगमभावं ग विजर्तनि ॥१३२॥



विष्णोर्गोत्रो जीव मायामात्रमात्र ॥१८०॥

सर्वकालान्तोऽपि न भिद्यते ॥ १८१ ॥  
स्यात्, नाना मीमांसकाणां भेदोऽपि न भिद्यते ॥ १८२ ॥

विष्णोर्गोत्रो जीव मायामात्रमात्र ॥ १८३ ॥

सर्वकालान्तोऽपि न भिद्यते ॥ १८४ ॥  
नियमवानो वा, अनेकान्तमात्रो वा ? यदि न प्रमाणान्तो  
सर्वकालान्तो अनेकान्तमात्रो वा, सर्वकालान्तो पदनात् सर्व-  
शब्द, एवं विभक्त्यर्थोऽपि सिद्धं नः समीक्षाम् । अथवा नियम-  
वानो चेत्तर्हि सकलार्थिनां तत्र प्रतीतिः कथं स्यात् ? नित्यः  
अनित्यः एकः अनेकः भेदः अभेदः कथं प्रतीतिः स्यात् निय-  
मितपक्षत्वात् ? ॥१८०॥

विष्णोर्गोत्रो जीव मायामात्रमात्र ॥ १८५ ॥

तथाऽत्रैतन्यपक्षेऽपि सकलचैतन्योच्छेदः स्यात् ॥१८१॥  
मूर्तस्यैकान्तेनात्मनो न मोक्षस्यावाप्तिः स्यात् ॥१८२॥  
सर्वथाऽमूर्तस्यापि तथात्मनः संसारविलोपः स्यात् ॥१८३॥  
एकप्रदेशस्यैकान्तेनाखण्डपरिपूर्णस्यात्मनोऽनेककार्यकारित्वं  
एव हानिः स्यात् ॥१८४॥

विष्णोर्गोत्रो जीव मायामात्रमात्र ॥ १८५ ॥

सर्वथाऽनेकप्रदेशत्वेऽपि तथा तस्यानर्थकार्यकारित्वं स्व-  
स्वभावशून्यताप्रसङ्गात् ॥१८५॥







परमभावग्रहणमर्थः प्रयोजनमस्येति पर्यायार्थिकः

॥१८०॥

॥ इति पर्यायार्थिकस्य व्युत्पत्तिः ॥

—\*—

पर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येति पर्यायार्थिकः ॥१८१॥

अनादिनित्यपर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येत्यानादिनित्य-  
पर्यायार्थिकः ॥१८२॥

टिप्पण—अनादिनित्य पर्यायार्थिको यथा पुद्गलपर्यायो नित्यो  
मेवादिः ।

सादिनित्यपर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येति सादिनित्य-  
पर्यायार्थिकः ॥१८३॥

टिप्पण—सादिनित्यपर्यायार्थिको यथा भिन्नजीवपर्यायो नित्यः ।

शुद्धपर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येति शुद्धपर्यायार्थिकः

॥१८४॥

अशुद्धपर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येति अशुद्धपर्यायार्थिकः

॥१८५॥

॥ इति पर्यायार्थिकस्य व्युत्पत्तिः ॥

—\*—

नैकं गच्छतीति निगमः, निगमोविकल्पस्तत्रभवो नैगमः

॥१८६॥

अभेदरूपतया वस्तुजातं संगृह्णातीति संग्रहः ॥१८७॥

टिप्पण—वस्तुजातं = वस्तुसमूहः ।





[illegible]

सौर्ज्यं समन्वोर्जं त्वाभातः, संज्येयः समन्ताः, परिष्णामः  
परिष्णामिसम्बन्धाः, शब्दाभातेयसम्बन्धाः, ज्ञानजेयसम्बन्धाः  
नास्मिन्नयोस्त्वन्वाञ्जेयपादि स-यार्थैः अयस्यार्थैः सदयस्यार्थैः  
द्वेतेत्युपनग्निनामद्वयव्यवहारायनगम्यार्थैः ॥२१॥

अध्यात्मजनों का कथन—

पुनरप्यव्यात्मभाषया नया उक्तान्ते ॥२१४॥

तावन्मूलनयो द्वौ निश्चनयो व्यवहारश्च ॥२१५॥

तत्र निश्चयनयोऽभेदाविषयो, व्यवहारो भेदविषयः ॥२१॥

टिप्पण—अभेद विषयो श्रेयः सम्य मः निश्चयजनयः । भेदेन  
ज्ञातुं योग्यः सो व्यवहारजनयः ।

तत्र निश्चयो द्विविधः शुद्धनिश्चयोऽशुद्धनिश्चयश्च ॥२१॥

तत्र निरुपाधिकगुणगुण्यभेद विषयकः शुद्धनिश्चयो  
यथा केवलज्ञानादयो जीव इति ॥२१८॥

सोपाधिक विषयोऽशुद्धनिश्चयो यथा मतिज्ञानादयो  
जीव इति ॥२१६॥

टिप्पण—उपाधिना कर्मजनितविकारेण सह वर्तत इति सोपाधिः।

व्यवहारो द्विविधः सद्भूतव्यवहारोऽसद्भूतव्यवहारश्च  
॥२२०॥

तत्रैकवस्तुविषयः सद्भूतव्यवहारः ॥२२१॥

टिप्पण—यथा वृक्ष एक एव तल्लगनाः शाखा भिन्नाः; परन्तु वृक्ष एव तथा सद्भूतव्यवहारो गुणगुणिनोर्भेद कथनम् ।



मंगलान्तर्गुण पूर्वक मंगलार की प्रविष्टि—

## आत्मपद्धतिः

मंगलान्तर्गुण पूर्वक मंगलार की प्रविष्टि—

गुणानां विस्तारं वक्ष्ये स्वभावानां तथैव च ।

पर्यायाणां विशेषेण नन्वा चोरे जिनेश्वरम् ॥१॥

अन्वयार्थ—(वीर जिनेश्वर) विशेष रूप से मोक्ष लक्ष्मी को देने वाला वीर जिनेश्वर को श्रवण श्री महावीर भगवान को (नन्वा) समझार लगे (ग्रह) से देवमेताचार्य (गुणानां) द्रव्यगुणों के (तथैव च) और उगी से (स्वभावानां) स्वभावों के तथा (पर्यायाणां) पर्यायों के भी (विस्तार) विस्तार को (विशेषेण) विशेष रूप से (वक्ष्ये) कहना है। श्रवण से स्वभाव और पर्यायों के स्वरूप विस्तारपूर्वक वर्णन करना है।

विशेषार्थ—यह मंगलरूप श्लोक देशामणिक होने से मंगल, निमित्त हेतु, परिमाण, नाम और कर्ता इन छह अधिकारों का मकारण प्रत्यक्ष विज्ञाता है। कहा भी है—

मंगल-णिमित्त-हेतु परिमाणं नाम तद् य कर्तारं ।

वागिरिय छ पिप पच्छा वक्खाणुउ सत्थमाइरियो ॥

मंगल, निमित्त, हेतु, परिमाण, नाम और कर्ता इन छह अधिकारों का व्याख्यान करने के पश्चात् आचार्य शास्त्र का व्याख्यान करे।







होता है। पर्य-निर्णय में साक्षात्कार और तत्त्वज्ञान में परमात्मज्ञान होता है।

उन कथन में उन लोगों के मत का गणन हो जाता है जो शास्त्र के ज्ञान में निमित्त न मानकर यह कहते हैं कि शास्त्र में ज्ञान नहीं होता है।

परिमाण की व्याख्या—अक्षर, पद आदि की अपेक्षा परिमाण नग्न है और तद्वाच्य विषय की अपेक्षा परिमाण अनन्त है।

नाम—इस शास्त्र का नाम आलापपद्धति है।

कर्ता—अर्थकर्ता और ग्रन्थकर्ता के भेद से कर्ता दो प्रकार का है। श्री १००८ महाश्वर तीर्थंकर अर्थकर्ता हैं। श्री १०८ गौतम गणधर द्रव्यश्रुत के कर्ता हैं। श्री गौतम स्वामी, लोहाचार्य और जम्बू स्वामी ये तीन अनुवद्ध केवली हुए। इनके पश्चात् परिपाटी कम से पाँच श्रुतकेवली हुए। इसके पश्चात् ज्ञान हीन होना गया, किन्तु वह ज्ञान परम्परा से श्री १०८ देवसेन आचार्य को प्राप्त हुआ, जिन्होंने इस आलापपद्धति शास्त्र की रचना की है। इससे उस मत का खण्डन हो जाता है जो गर्वेंता यह मानते हैं कि एक द्रव्य दूसरे द्रव्य की पर्याय का कर्ता नहीं हो सकता है।

इस प्रकार मंगल, निमित्त, हेतु, परिमाण, नाम और कर्ता का व्याख्यान समाप्त हुआ।

आलापपद्धतिर्वचनरचनाऽनुक्रमेण

नयचक्रस्योपरि उच्यते ॥१॥

अन्वय—(आलाप) अक्षोच्चारण अर्थात् बोलचाल। (पद्धति) रीति या ढंग। (नयचक्र) सम्यग्ज्ञान के अवयव रूप नय ताका समूह।

सूत्रार्थ—वचनों की रचना के क्रम के अनुसार प्राकृतमय नयचक्र नामक शास्त्र के आधार पर से आलापपद्धति को (मैं देवसेनाचार्य) कहता हूँ।

अर्थात् इस आलापपद्धति शास्त्र की रचना प्राकृत-नयचक्र ग्रंथ के आधार पर हुई है।

सा च किमर्थम् ? ॥२॥

सूत्रार्थ—इस आलापपद्धति ग्रंथ की रचना किस नियम की गई है ?





जो समस्त द्रव्यों को अवगाहन देने वह आकाश द्रव्य है। अथवा अपेक्षा आकाश द्रव्य मन द्रव्यों में नष्ट है, मन-व्यापी है, इसलिए समस्त द्रव्यों को अवगाहन देने में समर्थ है। अन्य द्रव्य भी परस्पर अवगाहन देते हैं, किन्तु मन-व्यापी नहीं होने से वे समस्त द्रव्यों को अवगाहन नहीं सकते, इसीलिये अवगाहनहेतुत्व आकाश द्रव्य का लक्षण कहा गया है। घर्म-द्रव्य के अभाव के कारण अन्तोकाकाश में कोई द्रव्य नहीं जाता। इसलिये वह किसी को अवगाहन नहीं देता है। फिर भी उसमें अवगाहन की शक्ति है। इस प्रकार अन्तोकाकाश में भी अवगाहन-हेतुत्व लक्षित हो जाता है। इससे, कार्य होने पर ही निमित्त कारण कहना इस सिद्धान्त का खण्डन हो जाता है। निमित्त अपने कारणपने की शक्ति निमित्त कहलाता है।

जो द्रव्यों के वर्तन में सहकारी कारण हो वह कालद्रव्य है। काल अभाव में पदार्थों का परिणामन नहीं होगा। परिणामन न हो तो द्रव्य वही भी न होगी। सर्व द्रव्य का प्रसंग आवेगा।<sup>१</sup>

द्रव्य का लक्षण—

सद्द्रव्यलक्षणम् ॥६॥

मूत्रार्थ—द्रव्य का लक्षण सत् है।

उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ॥७॥

मूत्रार्थ—जो उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य से युक्त है वह सत् है।

विशेषार्थ—अन्तरंग और बहिरंग निमित्त के वश से जो नवीन अथवा उत्पन्न होती है उसे उत्पाद कहते हैं। जैसे, मिट्टी के पिंड की घट पदार्थ पूर्व अवस्था के नाश को व्यय कहते हैं। जैसे, घट की उत्पत्ति होने पर मिट्टी आकृति का व्यय। अनादिकालीन पारिणामिक स्वभाव है, उसका व्यय और

१. सर्वार्थनिष्ठि अ० ५। २. 'कालाभावे न भावानां परिणामनं दंतरान्। न द्रव्यं नापि पथ्ययिः सवभावाः प्रसज्यते॥' (नियमसार भाषा ३: की टीका में उद्धृत)। ३. तत्त्वार्थ सूत्र अ० ५ सूत्र २६। ४. तत्त्वार्थ सूत्र अ० ५ सूत्र ३०।







### प्रत्येकद्रव्ये सन्निवृत्तिः ॥१०॥

सूत्रार्थ—उन दस सामान्य गुणों में से प्रत्येक द्रव्य में आठ-आठ गुण हैं और दो-दो गुण नहीं हैं ।

जीव द्रव्य में चेतनत्व और मूर्तत्व ये दो गुण नहीं हैं । पुद्गल द्रव्य में चेतनत्व और अमूर्तत्व ये दो गुण नहीं हैं । धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य और कालद्रव्य इन चार द्रव्यों में चेतनत्व और मूर्तत्व ये दो गुण नहीं हैं । इस प्रकार दो-दो गुणों को छोड़कर प्रत्येक द्रव्य में आठ-आठ गुण होते हैं ।

जीव में अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, अगुरुलघुत्व, प्रदेशत्व, चेतनत्व और अमूर्तत्व ये आठ गुण होते हैं ।

पुद्गल द्रव्य में अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, अगुरुलघुत्व, प्रदेशत्व, अचेतनत्व, मूर्तत्व ये आठ गुण होते हैं ।

धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य, कालद्रव्य इन चार द्रव्यों में अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, अगुरुलघुत्व, प्रदेशत्व, अचेतनत्व और अमूर्तत्व ये आठ गुण होते हैं ।

अब द्रव्यों के विशेष गुणों को बतलाते हैं ।

ज्ञानदर्शनसुखवीर्याणि स्पर्शरसगन्धवर्णाः गतिहेतुत्वं स्थितिहेतुत्वमवगाहहेतुत्वं वर्तनाहेतुत्वं चेतनत्वमचेतनत्वं मूर्तत्वममूर्तत्वं द्रव्याणां षोडश विशेषगुणाः ॥११॥

सूत्रार्थ—ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्य, स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण, गतिहेतुत्व, स्थितिहेतुत्व, अवगाहनहेतुत्व, वर्तनाहेतुत्व, चेतनत्व, अचेतनत्व, मूर्तत्व, अमूर्तत्व ये द्रव्यों के सोलह विशेष गुण हैं ।

विशेषार्थ—जिस शक्ति के द्वारा आत्मा पदार्थों को साकार जानता है सो ज्ञान है ।

भूतार्थ का प्रकाश करने वाला ज्ञान होता है । अथवा सद्भाव के निश्चय करने वाले धर्म को ज्ञान कहते हैं ।<sup>१</sup>

१. 'भूतार्थप्रकाशक ज्ञानम् । अथवा सद्भावविनिश्चयोपलम्भकं ज्ञानम् ।' (धवन पृ० १ पृ० १८२ व १८३)



## प्रमाणपरिभाषिका

प्रमाणपरिभाषिका में द्रव्य का वर्णन ।

गुणपरिभाषिका ॥२७॥

सूत्रार्थ—गुणपरिभाषिका नामा द्रव्यम् ।

विशेषार्थ—यदिह सूत्र ३ व ७ में द्रव्य का वर्णन 'गर्भ' तथा 'ऊर्ध्व' 'व्यय-ध्रुव्य' कह चुके हैं फिर भी यहाँ प्रमाणपरिभाषिका में द्रव्य का वर्णन ही किया है । द्रव्य का गुण और पर्यायों में कदाचित् भेद है इसलिये सूत्र में 'गर्भ' प्रत्यय का प्रयोग किया गया है । गुण अन्तर्गामी होते हैं और पर्याय बहिर्गामी होती हैं । कहा भी है—

गुण इदि द्रव्यविद्वागं द्रव्यविकारो हि पञ्चवो भविष्ये ।

तेहि अणूणां द्रव्यं अनुदपस्त्रिद्वं ह्ये गिच्छं ॥<sup>१</sup>

अर्थ—द्रव्य में भेद करने वाले धर्म को विशेष गुण और द्रव्य के विना को पर्याय कहते हैं । द्रव्य इन दोनों से युक्त होता है । तथा वह अणुतन्मिदम् ।

१. यही सूत्र मोक्षशास्त्र प्र० ५ में सूत्र ३८ है । २. सर्वार्थसिद्धि ५/८













में जीव में मूर्तित्व स्थापित हो जाता है । जीव चार द्रव्य (धर्म, अधर्म, आकाश, काल) पुरुष के साथ बंध को प्राप्त नहीं होने, इसलिए उनमें मूर्त-स्वभाव का निषेध किया गया है ।

धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य, कालद्रव्य ये चारों द्रव्य बंध को प्राप्त नहीं होते इसलिए उनमें विभावस्वभाव, उपनर्तित्वस्वभाव और अशुद्धस्वभाव भी नहीं होते, क्योंकि अन्य द्रव्य के साथ बंध को प्राप्त होने पर ही द्रव्य अशुद्ध होता है, विभावस्व परिणमता है और कर्तृत्वं उक्त अन्य द्रव्य के स्वभाव को ग्रहण करने से अन्यद्रव्य के स्वभाव का उपचार होता है । जीव और पुद्गल बंध को प्राप्त होते हैं, इसलिए उनमें विभावस्वभाव, उपनर्तित्व स्वभाव और अशुद्धस्वभाव का कथन किया गया है ।

कालद्रव्य में स्वभावों की संख्या—

तत्र बहुप्रदेशत्वविना कालस्य पंचदश स्वभावाः ॥३१॥

सूत्रार्थ—(इक्कीस स्वभावों में से पांच स्वभावों का निषेध करते सूत्र ३० में शेष सोलह स्वभाव धर्मादिक तीन द्रव्यों में बतलाये गये थे) उन सोलह स्वभावों में से बहुप्रदेश-स्वभाव के बिना शेष पन्द्रह स्वभाव कालद्रव्य में पाये जाते हैं ।

विशेषार्थ—जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश ये पांच द्रव्य बहुप्रदेश हैं, इसीलिये इनको पंचास्तिकाय कहा गया है, किन्तु कालद्रव्य अर्थात् काल एकप्रदेशी है, इसलिये उसको बहुप्रदेशी अर्थात् कायवान् नहीं कहा गया है ।

‘अजीवकायाधर्माधर्माकाशपुद्गलाः ।’ ॥५॥१॥ । तत्त्वार्थसूत्र

अर्थ—धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य, पुद्गलद्रव्य ये चारों धर्म भी हैं और कायवान् भी हैं ।

जीव, पुद्गल, धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य यद्यपि बहुप्रदेशी हैं तथापि श्रवण की अपेक्षा से इनमें एकप्रदेशी-स्वभाव भी है ।

यद्यपि पुद्गल परमाणु भी एकप्रदेशी है तथापि स्निग्ध-रूक्ष गुणों के कारण वह पुद्गल परमाणु बंध को प्राप्त होने पर बहुप्रदेशी हो जाता है ।



प्रमाण का लक्षण—

सम्यग्ज्ञानं प्रमाणम् ॥३४॥

सूत्रार्थ—सम्यग्ज्ञान को प्रमाण कहते हैं ।

विशेषार्थ—संशय विपर्यय और अनव्यवसाय से रहित ज्ञान को सम्यग्ज्ञान कहते हैं । समीचीन ज्ञान को सम्यग्ज्ञान कहते हैं ।

अन्यूनमनतिरिक्तं यथातथ्यं विना च विपरीतात् ।

निःसन्देहं वेद यदाहुस्तज्ज्ञानमागमिनः ॥४२॥

[रत्नकरण्ड आकर]

अर्थ—जो ज्ञान न्यूनता रहित, अधिकता रहित, विपरीतता रहित, सन्देह रहित, जैसा का तैसा जानता है, शास्त्र के ज्ञाता पुरुष उसको ज्ञान कहते हैं ।

अनादि को सादि रूप जानना, अनन्त (अन्त रहित) को सन्त जानना, अविद्यमान पर्याय को विद्यमान रूप से जानना, अभाव रूप को सद्भाव रूप से जानना, अनियत को नियत रूप जानना सम्यग्ज्ञान नहीं क्योंकि उसने पर्याय नहीं जाना है ।

प्रमाण के भेद—

तद्द्वेधा प्रत्यक्षेतरभेदात् ॥३५॥

सूत्रार्थ—प्रत्यक्ष प्रमाण और इतर अर्थात् परोक्ष प्रमाण के भेद प्रमाण दो प्रकार का है ।

विशेषार्थ—तत्त्वार्थ सूत्र में भी 'तत्प्रमाणे ॥१/१०॥' इस सूत्र प्रमाण के दो भेद बतलाये हैं । इतर से अभिप्राय परोक्ष का है । प्रत्यक्ष प्रमाण, सत्य प्रमाण परोक्षप्रमाण हैं । जो इन्द्रिय ज्ञान है वह परोक्षप्रमाण है ।

प्रति + अक्ष = प्रत्यक्ष । 'अक्षणोति व्याप्नोति जानातीत्यक्ष' इस प्रकार अक्ष शब्द का अर्थ आत्मा है । केवल आत्मा के प्रति जो ज्ञान है उसको प्रत्यक्ष कहते हैं । [सर्वार्थसिद्धि १/१२]





मान से उनमें प्रथम व्यवहार किया गया है। तथा ईश्वर और जन आदि के लाने में लगे हुए किसी पुरुष से कोई पूछता है कि आप क्या कर रहे हैं? उसने कहा—भात पका रहा हूँ। उस समय भात पर्याप्त मतिहित नहीं है। केवल भात के लिये किये गये व्यापार में भात का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार का जितना व्यवहार अनिष्टार्थ अर्थ के अवलम्बन से संकल्प मात्र से विषय करता है वह सब नैगम नय का विषय है। [सर्वार्थसिद्धि १/३३]

संग्रह नयः—जो नय अभेद रूप से सम्पूर्ण वस्तु समूह को विषय करता है वह संग्रह नय है।<sup>१</sup>

भेद सहित सब पर्यायों को अपनी जाति के अविरोध द्वारा एक मानकर सामान्य से सब को ग्रहण करने वाला नय संग्रह नय है। यथा—सत्, द्रव्य और घट आदि। 'सत्' कहने पर सत् इस प्रकार के वचन और विज्ञान की अनुवृत्ति रूप लिंग से अनुमित सत्ता के आधारभूत सब पदार्थों का सामान्य रूप से संग्रह हो जाता है। 'द्रव्य' ऐसा कहने पर भी 'उन उन पर्यायों को द्रव्यता है, प्राप्त होता है' इस प्रकार इस व्युत्पत्ति से युक्त जीव, अजीव और उनके सब भेद प्रभेदों का संग्रह हो जाता है। तथा 'घट' ऐसा कहने पर घट इस प्रकार की बुद्धि और घट, इस प्रकार के शब्द की अनुवृत्ति रूप लिंग से अनुमित सब घट पदार्थों का संग्रह हो जाता है। [सर्वार्थसिद्धि १/३३]

व्यवहारनय—संग्रह नय से ग्रहण किये हुए पदार्थ को भेद रूप से व्यवहार करता है, ग्रहण करता है, वह व्यवहार नय है।<sup>१</sup>

संग्रह नय के द्वारा ग्रहण किये गये पदार्थों का विधिपूर्वक अवग्रहण अर्थात् भेद करना व्यवहारनय है। सर्व संग्रह नय के द्वारा जो वस्तु ग्रहण की गई है, वह अपने उत्तर भेदों के बिना व्यवहार कराने में असमर्थ है, इस लिये व्यवहारनय का आश्रय लिया जाता है। यथा—संग्रह नय का विषय जो द्रव्य है, वह जीव अजीव की अपेक्षा किये बिना व्यवहार कराने में असमर्थ है, इसलिये जीव द्रव्य है और अजीव द्रव्य है, इस प्रकार के व्यवहार का



रूप किया नहीं पाई जाती ।

[जयघवल पु० १ पृ० २२१]

तथा इस ऋजुमूत्र नय की दृष्टि में 'काक कृष्ण होना है' यह वाक्य भी नहीं बन सकता है, क्योंकि जो कृष्ण है वह कृष्णरूप ही है, काक नहीं है । यदि कृष्ण को काकरूप माना जाय तो अमर आदिक को भी काकरूप मानने की आपत्ति प्राप्त होती है । उसी प्रकार काक भी काकरूप है कृष्णरूप नहीं है, क्योंकि यदि काक को कृष्णरूप माना जाय तो काक के पीले पित्त सफेद हृद्दी और ज्ञान रुधिर आदिक को भी कृष्णरूप मानने की आपत्ति प्राप्त होती है ।

[जयघवल पु० १ पृ० २२१]

इस ऋजुमूत्र नय की दृष्टि से विशेषण-विशेष्य भाव भी नहीं बनता है, क्योंकि भिन्न दो पदार्थों में तो विशेषण-विशेष्य भाव बन नहीं सकता, क्योंकि भिन्न दो पदार्थों में विशेषण-विशेष्य भाव मानने पर अव्यवस्था की आपत्ति प्राप्त होती है, अर्थात् जिन किन्हीं दो पदार्थों में भी विशेषण-विशेष्य भाव हो जायगा । उसी प्रकार अभिन्न दो पदार्थों में विशेषण-विशेष्य भाव नहीं बन सकता, क्योंकि अभिन्न दो पदार्थों का अर्थ एक पदार्थ ही होता है और एक पदार्थ में विशेषण-विशेष्य भाव के मानने में विरोध आता है ।

[जयघवल पु० १ पृ० २२६]

इस ऋजुमूत्र नय की दृष्टि में संयोग अथवा समवाय सम्बन्ध नहीं बनता है । इसीलिये सजातीय और विजातीय दोनों प्रकार की उपाधियों से रहित केवल शुद्ध परमाणु ही है, अतः जो स्तंभादिकरूप स्कन्धों का प्रत्यय होता है वह ऋजुमूत्र नय की दृष्टि में भ्रान्त है । तथा वह परमाणु निरवयव है, क्योंकि परमाणु के ऊर्ध्वभाग, अधोभाग और मध्यभाग आदि अवयवों के मानने पर अनवस्था दोष की आपत्ति प्राप्त होती है और परमाणु की अपरमाणुपने का प्रसंग प्राप्त होता है ।

[जयघवल पु० १ पृ० २३०]

इस ऋजुमूत्र नय की दृष्टि में वन्ध्य-वन्धक भाव, वध्य-घातक भाव, दाह्य-दाहकभाव और संसारादि कुछ भी नहीं बन सकते ।

[जयघवल पु० १ पृ० २३२]

इस ऋजुमूत्र नय की दृष्टि में ग्राह्य-ग्राहकभाव भी नहीं बनता है । अतः



नक्षत्र है। यहाँ पर नक्षत्र शब्द एतन्नाम्ना और पुनर्नक्षत्र शब्द द्विवचनान्न है। इसलिये एकवचन के स्थान में द्विवचन का कथन करने में संख्या-व्यभिचार है। भूत आदि काल के स्थान में भविष्यत् आदि काल का कथन करना काल-व्यभिचार है। जैसे—‘विष्णुस्तृणाम्ना पुत्रो जनिता’ जिनके समस्त वित्त को देव लिया है ऐसा हमको पुत्र होगा। यहाँ पर ‘निश्चयदृष्ट्वा’ शब्द भूत-कालीन है और ‘जनिता’ यह भविष्यत्कालीन है। अतः भविष्य अर्थ के विषय में भूतकालीन प्रयोग करना काल-व्यभिचार है। एक कारक के स्थान पर दूसरे कारक के प्रयोग करने को साधन-व्यभिचार कहते हैं। उत्तमपुरुष के स्थान पर मध्यमपुरुष और मध्यमपुरुष के स्थान पर उत्तमपुरुष आदि प्रयोग करने को पुरुष-व्यभिचार कहते हैं।

इस प्रकार जितने भी निष्पन्न आदि व्यभिचार हैं वे सभी श्रुत हैं, क्योंकि अन्य अर्थ का अन्य अर्थ के साथ सम्बन्ध नहीं हो सकता। इसलिये जैसा कि हो, जैसी संख्या हो और जैसा साधन हो उसी के अनुसार शब्दों का कथन करना उचित है।

[जयघवल पु० १ पृ० २३५-२३७]

समभिरुद्धनयः—आगे सूत्र २०१ में कहेंगे ‘परस्परैणाभिरुद्धाः समभिरुद्धाः। शब्दभेदेऽप्यर्थभेदो नास्ति, यथा शक्र इन्द्रः पुरंदर इत्यादयः समभिरुद्धाः।’ परस्पर में अभिरुद्ध शब्दों को ग्रहण करने वाला नय समनिरुद्ध नय कहलाता है। इस नय के विषय में शब्द-भेद रहने पर भी अर्थ-भेद नहीं है, जैसे शक्र, इन्द्र और पुरंदर ये तीनों ही शब्द देवराज के पर्यायवाची होने से देवराज में अभिरुद्ध हैं। किन्तु शोलापुर से प्रकाशित नयचक्र पृ० १८ पर लिखा है—‘शब्दभेदेऽप्यर्थभेदो भवत्येवेति’ अर्थात् शब्द-भेद होने पर अर्थ-भेद होता ही है। जयघवल में भी इस प्रकार कहा है—

शब्दभेद से जो नाना अर्थों में अभिरुद्ध है अर्थात् जो शब्दभेद से अर्थभेद मानता है वह समभिरुद्धनय है। जैसे एक ही देवराज इन्द्रनकिमा का कर्त होने से अर्थात् आज्ञा और ऐश्वर्य आदि से युक्त होने के कारण इन्द्र कहलाता है और वही देवराज शक्रनात् अर्थात् सामर्थ्यवाला होने के कारण शक्र कह



एवंभूत नय—जिस नय में नामान्वयिणी की प्रधानता होती है वह  
एवंभूत नय है ।<sup>१</sup>

जिस शब्द का जिस विभाजन अर्थ है तद्वत्प्रतिपाद्य से परिणत मन  
ही उस शब्द का प्रयोग करना युक्त है, अन्य समय में नहीं, ऐसा विन  
का अभिप्राय है वह एवंभूत नय है । इस नय में पदों का समास नहीं  
है, क्योंकि जो स्वल्प और काल की अपेक्षा भिन्न हैं उनको एक मात्र  
विरोध आता है । यदि कहा जाय कि पदों में एककालवृत्ति रूप समास बन  
जाता है तो ऐसा कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि पद क्रम से ही उत्पन्न होते  
हैं और वे जिस क्षण में उत्पन्न होते हैं, उसी क्षण में विनष्ट हो जाते हैं  
इसलिये अनेक पदों का एक काल में रहना नहीं बन सकता । तथा इन  
में जिस प्रकार पदों का समास नहीं बन सकता है, उसी प्रकार घ, ट, प्र  
वर्णों का भी समास नहीं बन सकता, क्योंकि अनेक पदों के समास मानने में भी  
जो दोष कह आये हैं, वे सब दोष अनेक वर्णों के समास मानने में भी प्रा  
होते हैं । इसलिये एवंभूत नय की दृष्टि में एक ही वर्ण एक अर्थ का वाक्य  
है । [जयधवल पु० १ पृ० २२५]

### उपनयाश्च कथ्यन्ते ॥४२॥

सूत्रार्थ—अब उपनयों का कथन करते हैं ।

उपनय के लक्षण कथन करने के लिये सूत्र कहते हैं ।

### नयानां समीपा उपनयाः ॥४३॥

सूत्रार्थ—जो नयों के समीप में रहें वे उपनय हैं ।

विशेषार्थ—‘आत्मन उपसमीपे प्रमाणादीनां चा तेषामुपसमीपे  
नयतीत्युपनयः ।’ [संस्कृत नय चक्र पृ० ४५] अर्थात् जो आत्मा के नय  
प्रमाणादिकों के अत्यन्त निकट पहुँचाता है वह उपनय है ।

यह उपनय भी वस्तु के यथार्थ धर्म का कथन करता है, अपकार्य  
का कथन नहीं करता, इसलिये इसके द्वारा भी वस्तु का यथार्थ बोध होता है ।





एकेन्द्रिय जीव का उपचार । २. दर्पणरूप पर्याय में अन्य पर्याय का उपचार । किसी के प्रतिविम्ब को देखकर जिसका वह प्रतिविम्ब है उस प्रतिविम्बरूप बतलाना । ३. मतिज्ञान मूर्त है—यहां विजाति मूर्त विजाति मूर्तगुण का आरोपण है । ४. जीव-अजीव ज्ञेय अर्थात् विषयक हैं । यहां जीव-अजीव द्रव्य में ज्ञानगुण का उपचार है । ५. बहुप्रदेशी है अर्थात् परमाणु पुद्गल द्रव्य में बहुप्रदेशी पर्याय का उपचार है । ६. श्वेत प्रसाद । यहां पर श्वेत गुण में प्रसाद द्रव्य का आरोपण है । ७. ज्ञानगुण के परिणामन में ज्ञान-पर्याय का ग्रहण, गुण में पर्याय का आरोपण है । ८. स्कंध को पुद्गल द्रव्य कहना, पर्याय में द्रव्य का उपचार है । ९. इसका शरीर रूपवान है । यहां पर शरीर रूप पर्याय में गुण का उपचार किया गया है ।<sup>१</sup>

मुख्य के अभाव में प्रयोजनवश या निमित्तवश जो उपचार होता है उपचरित-असद्वृत्त-व्यवहारनय है ।<sup>२</sup> जैसे मार्जार (बिलाल) को कहना । यहाँ पर मार्जार और सिंह में सादृश्य सम्बन्ध के कारण में सिंह का उपचार किया गया है, क्योंकि सम्बन्ध के बिना उपचार न गकता । जैसे बूढ़े आदि में सिंह का उपचार नहीं किया जा सकता । सम्बन्ध अनेक प्रकार का है । जैसे—अविनाभाव सम्बन्ध, संश्लेष सम्बन्ध, गाम-परिणामी सम्बन्ध, श्रद्धा-श्रद्धेय सम्बन्ध, ज्ञान-ज्ञेय सम्बन्ध, वागि-गाम सम्बन्ध इत्यादि । ये सब उपचरित-असद्वृत्त-व्यवहारनय के विषय हैं अर्थात् 'वस्तुतः का अज्ञान सम्बन्धदर्शन है' यह उपचरित-असद्वृत्त-व्यवहारनय विषय है, क्योंकि यहां पर श्रद्धा-श्रद्धेय सम्बन्ध पाया जाता है ।<sup>३</sup> जो उपचरित-असद्वृत्त-व्यवहारनय का विषय है, ज्ञेय-ज्ञायक सम्बन्ध उत्पन्न है, एवं जो ज्ञेय उनका ज्ञायक संबंध होता है । इत्यादि

द्वदानीमतेषां भेदा उच्यन्ते ॥४५॥

संग्रह — एवं उच्यते (नयीं और उपनयीं के) भेदों को कहते हैं ।

१. विष्णुसूत्र २१० । २. आलापपद्धति सूत्र २१२ । ३. आलापपद्धति सूत्र २१३ ।



सूत्रार्थ—उत्पाद-व्यय को गौण करके (अप्रधान करके) सत्ता (ध्रुव्य) को ग्रहण करने वाली शुद्ध द्रव्याधिक नय है। जैसे—द्रव्य नित्य है।

विशेषार्थ—द्रव्य का लक्षण उत्पाद-व्यय-ध्रुव्य है।<sup>१</sup> तथा द्रव्य अनेकान्तात्मक अर्थात् नित्य-अनित्य-प्रात्मक है। किन्तु शुद्ध द्रव्याधिक नय उत्पाद-व्यय को अप्रधान करके मात्र ध्रुव्य को ग्रहण करके (नित्य-अनित्य-प्रात्मक) द्रव्य को नित्य वतनाती है। अनेकान्त दृष्टि में इस शुद्ध-द्रव्याधिक नय का विषय यथार्थ नहीं है तथापि एक धर्म को (अनित्य धर्म को) गौण करके नित्य धर्म को मुख्य करने से इस नय के विषय को सर्वथा अयथार्थ नहीं कहा जा सकता।

उत्पादव्ययं गौणं किञ्चा जो गृह्य केवला सत्ता।

भरणं सो सुदृशश्चो इह सत्तागाहश्चो समः ॥१६॥ [नयचक्र]

अर्थात्—उत्पाद-व्यय को गौण करके मात्र ध्रुव को ग्रहण करने वाला नय आगम में सत्ताग्राहक शुद्ध नय है।

३. भेदकल्पनानिरपेक्षः शुद्धो द्रव्याधिको यथा निजगुण-पर्यायस्वभावाद् द्रव्यमभिन्नम् ॥४६॥

सूत्रार्थ—शुद्ध द्रव्याधिक नय भेदकल्पना की अपेक्षा से रहित है, जैसे—निज गुण से, निज पर्याय से और निज स्वभाव से द्रव्य अभिन्न है।

विशेषार्थ—यद्यपि संज्ञा, संख्या, लक्षण और प्रयोजन की अपेक्षा गुण और द्रव्य में, पर्याय और द्रव्य में तथा स्वभाव और द्रव्य में भेद है किन्तु प्रदेश की अपेक्षा गुण-द्रव्य में, पर्याय-द्रव्य में, स्वभाव-द्रव्य में भेद नहीं है अर्थात् अनेकान्त रूप से द्रव्य भेद-अभेद-प्रात्मक है।

शुद्ध द्रव्याधिक नय का विषय भेद नहीं है, मात्र अभेद है। भेद विवक्षित को गौण करके शुद्ध-द्रव्याधिक नय की अपेक्षा गुण-पर्याय-स्वभाव का द्रव्य अभेद है, क्योंकि प्रदेश भेद नहीं है।



विशेषार्थ—शुद्ध-द्रव्याधिक नय का विषय मात्र ध्रौव्य है ।<sup>१</sup> क्योंकि उत्पाद-व्यय पर्यायाधिक नय का विषय है । द्रव्य का लक्षण सत् है और सत् का लक्षण उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यमयी है ।<sup>२</sup> इस प्रकार द्रव्य का लक्षण उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य रूप है, किन्तु उत्पाद-व्यय पर्यायाधिक नय का विषय होने के कारण उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यात्मक द्रव्य को—अशुद्ध द्रव्य को—अशुद्ध द्रव्याधिक नय का विषय कहा है ।

उत्पादवयविमिस्सा सत्ता गहिऊण भणइ तिदयत्तं ।

द्ववस्स एयसमये जो हु असुद्धो इवे विदिओ ॥२२॥ [नयवत्त]

अर्थात्—उत्पाद-व्यय मिश्रित ध्रुव अर्थात् एक समय में इन तीन मयी द्रव्य को ग्रहण करने वाला दूसरा अशुद्ध नय है ।

६. भेदकल्पनासापेक्षोऽशुद्धद्रव्याधिको यथात्मनो दर्शन-  
जानादयोगुणाः ॥२२॥

सूत्रार्थ—भेदकल्पना-सापेक्ष द्रव्य अशुद्ध-द्रव्याधिक नय का विषय है, जेने—आत्मा के ज्ञान-दर्शनादि गुण हैं ।

विशेषार्थ—आत्मा एक असृष्ट द्रव्य है, उसमें ज्ञान-दर्शन आदि गुण नहीं हैं, ऐसा शुद्ध द्रव्याधिक नय का प्रयोजन है । कहा भी है—

‘एग्वि गाणं ए चरित्तं ए दंसणं जाणगो सुद्धो ।’

अर्थात्—आत्मा में न ज्ञान है, न चारित्र्य है, न दर्शन है, वह तो जायक, शुद्ध है ।

आत्मा में ज्ञान, दर्शन आदि गुणों की कल्पना करना अशुद्ध-द्रव्याधिक नय का विषय है । अर्थात् एक असृष्ट द्रव्य में गुणों का भेद करना अशुद्ध द्रव्याधिक नय का विषय है ।

भेदे सदि सम्बंधं गुणगुणियडेण कुणइ जो इवे ।

सो वि असुद्धो दिट्ठो सदिओ सो भेदकप्पेण ॥२३॥ [नयवत्त]

१. आलापनद्विती सूत्र ४८ । २. आलापनद्विती सूत्र ६ व ७ ।

३. समयसार गाथा ७ ।



मूत्रार्थ—स्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल स्वभाव की अपेक्षा द्रव्य को अस्ति रूप से ग्रहण करने वाला नय स्वद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिक नय है ।

विशेषार्थ—कल्याण पावर प्रिंटिंग प्रेस शोलापुर से प्रकाशित संस्कृत नयचक्र पृ० ३ व ५ पर इस नय का स्वरूप निम्न प्रकार कहा गया है—

‘परद्रव्यादीनां विवक्षामकृत्वा स्वद्रव्यस्वक्षेत्रस्वकालस्वभावोपेक्षया द्रव्यस्यास्तित्वमस्तीति स्वद्रव्यादिग्राहकद्रव्यार्थिकनयः ।’

अस्तित्वं वस्तुरूपस्य स्वद्रव्यादिचतुष्टयात् ।

एवं यो वक्तव्यभिप्रायं स्वादिग्राहकनिश्चयः ॥८॥

अर्थ—परद्रव्यादि की विवक्षा न कर, स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल और स्वभाव की अपेक्षा से द्रव्य के अस्तित्व को अस्तिरूप से ग्रहण करने वाला नय स्वद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिक नय है । अथवा स्वद्रव्यादि चतुष्टय से वस्तु स्वरूप का अस्तित्व बताना जिस नय का अभिप्राय है वह स्वद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिक नय है ।

आगे सूत्र १८८ में भी इस नय का कथन है ।

६. परद्रव्यादिग्राहकद्रव्यार्थिको यथा परद्रव्यादिचतुष्टयापेक्षया द्रव्यं नास्ति ॥५५॥

मूत्रार्थ—परद्रव्य परक्षेत्र परकाल परस्वभाव की अपेक्षा द्रव्य नास्ति रूप से ग्रहण करने वाला नय स्वद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिक नय है ।

विशेषार्थ—संस्कृत नयचक्र में इस नय का स्वरूप इस प्रकार कहा गया है—

‘स्वद्रव्यादीनां विवक्षामकृत्वा परद्रव्यपरक्षेत्रपरकालपरभावोपेक्षया द्रव्यस्य नास्तित्वकथकः परद्रव्यादिग्राहकद्रव्यार्थिकनयः ।’ [पृ० ३]

नास्तित्वं वस्तुरूपस्य परद्रव्याद्यपेक्षया ।

वाङ्मनार्थेषु यो वक्ति परद्रव्याद्यपेक्षकः ॥६॥ [पृ० ५]





अर्थात्—शुद्ध और अशुद्ध के उपचार से रहित जो नय द्रव्य के स्वभाव को ग्रहण करता है वह परमभावग्राहक द्रव्याधिक नय है ।

आगे सूत्र ११० में भी इस नय का कथन है ।



अथ पर्यायार्थिकस्य षड् भेदाः ॥५७॥

सूत्रार्थ—अथ पर्यायार्थिक नय के छः भेदों का कथन करते हैं—

१. अनादिनित्यपर्यायार्थिको यथा पुद्गलपर्यायो नित्यो मेवादिः ॥५८॥

सूत्रार्थ—अनादि-नित्य पर्यायार्थिक नय जैसे मेरु आदि पुद्गल की पर्याय नित्य है ।

विशेषार्थ—मेरु, कुलाचल पर्यंत, अकृत्रिम जिनविषय-जिनालय आदि ये सब पुद्गल की पर्यायें अनादिकाल से हैं अनन्तकाल तक रहेंगी, इनका कभी विनाश नहीं होगा अतः ये अनादि-नित्य-पर्यायार्थिक नय के विषय हैं । क्योंकि सभी पर्यायें विनाश को प्राप्त हों ऐसा एकान्त नहीं है । कहा भी है—

‘होदु विर्यंजणपज्जाओ, ए च विर्यंजणपज्जायस्स सव्वस्स विण्णसेण होद्व्वमिदि णियमो अत्थि, एयंतवादप्पसंगादो । ए च ए विण्णस्सदि त्ति द्व्वं होदि, उप्पाय-ट्ठिदि-भंगसंगयस्स द्व्वभाव-व्भुवगमादो ।’

[ घवल पु० ७ पृ० १७८ ]

अर्थ—‘प्रमव्यत्व’ जीव की व्यंजन पर्याय भले ही हो, किन्तु सभी व्यंजन पर्याय का नाश अवश्य होना चाहिये, ऐसा कोई नियम नहीं है, क्योंकि ऐसा मानने में एकान्तवाद का प्रसंग आ जायगा । ऐसा भी नहीं है कि जो वस्तु विनष्ट नहीं होती वह द्रव्य ही होना चाहिये, क्योंकि जिसमें उत्पाद-प्राप्ति और व्यय पाये जाते हैं उसे द्रवरूप में स्वीकार किया गया है ।

प्राकृत नयचक्र में भी कहा है—

अक्कट्टिमा अग्निद्व्वणा सत्तिमूराट्ठण पज्जायो गिद्व्वण्ण ।

जो सो अग्गाद्व्विच्चो जिण्णभग्निओ पज्जायत्थिण्णओ ॥२॥



विशेषार्थ—पर्यायाधिक नय के प्रथम भेद का विषय अनादिनित्य पर्याय है और इस दूसरे भेद का विषय सादि-नित्य पर्याय है। सिद्धपर्याय ज्ञानावरणादि आठों कर्मों के क्षय से उत्पन्न होती है अतः सादि है किन्तु इस पर्याय का कभी नाश नहीं होगा इसलिये नित्य है। उसी प्रकार ज्ञानावरण कर्म के क्षय से उत्पन्न होने वाला क्षायिक ज्ञान, दर्शनावरण कर्म के क्षय से उत्पन्न होने वाला क्षायिक दर्शन, मोहनीय कर्म के क्षय से उत्पन्न होने वाले क्षायिक सम्यग्दर्शन, क्षायिक चारित्र्य तथा अनन्त मुख, अन्तराय कर्म के क्षय से उत्पन्न होने वाले क्षायिक दान, लाभ, भोग, उपभोग, धीमं ये सब क्षायिक भाव भी सादि-नित्य पर्याय हैं। कहा भी है—

‘जीवा एव क्षायिकभावेन साद्यनिधनाः।’

[पञ्चास्तिकाय गा० ५३ टीका]

अर्थात्—क्षायिक भावों की अपेक्षा जीव भी सादि-अनिधन है।

इसी बात को प्राकृत नयचक्र में भी कहा गया है—

कम्मखयादुप्पण्णो अविणासी जो हु कारणाभावे।

इदमेवमुच्चरन्तो भण्णइ सो साइणिच्च एत्थो ॥२०१॥ [पृ० ७४]

अर्थात्—कर्मों के क्षय से उत्पन्न होने वाले भाव अविनाशी हैं, क्योंकि कर्मोदयरूप बाधक कारण का अभाव है। इन क्षायिक भावों को विषय करने वाली सादि-नित्य पर्यायाधिक नय है।

संस्कृत नयचक्र में भी कहा है—

पर्यायार्थी भवेत्सादि व्यये सर्वस्य कर्मणः।

उत्पन्नसिद्धपर्यायप्रादुको नित्यरूपकः ॥२॥

[पृ० ६]

आदत्ते पर्यायं नित्यं सादि च कर्मणोऽभावात्।

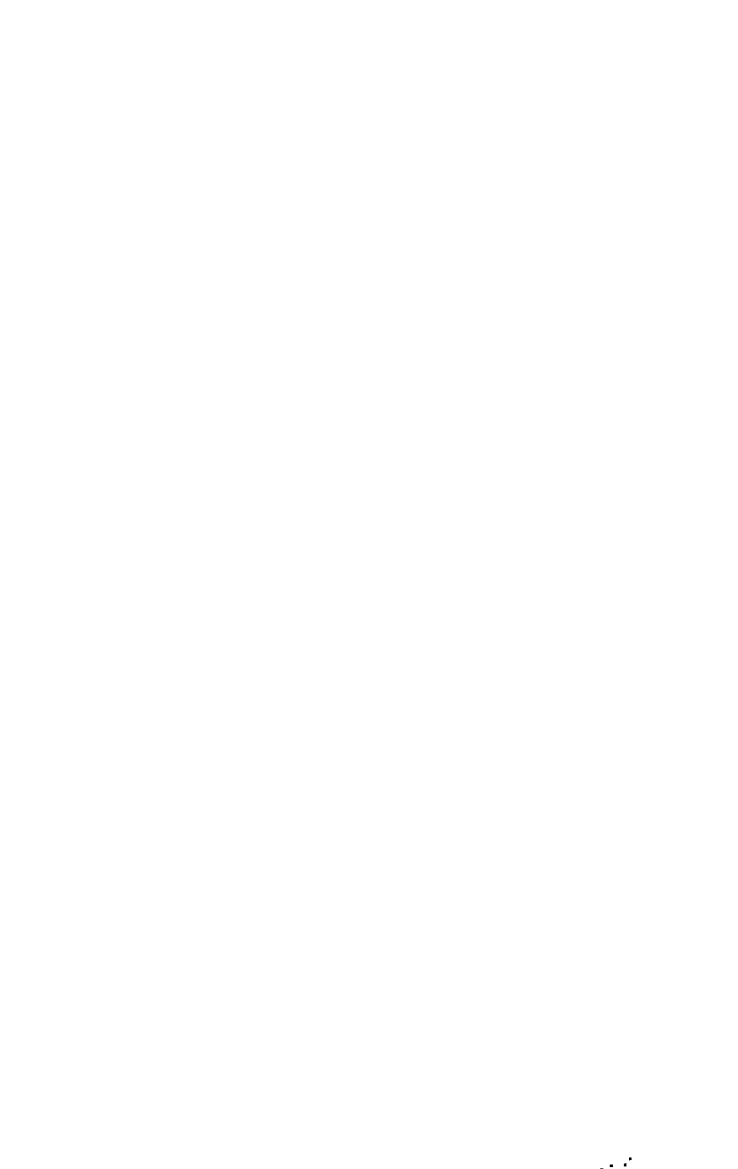
स सादि नित्यपर्यायार्थिकनामा नयः स्मृतः ॥८॥ [पृ० ४१]

‘शुद्धनिश्चयनयविवक्षां कृत्वा सकलकर्मक्षयोद्भूत चरमशरीराकारपर्यायपरिणतिरूपशुद्धसिद्धपर्यायः सादिनित्यपर्यायार्थिक नयः ॥२॥

[पृ० ७]







अर्थात्—शुद्ध पर्याय की विवक्षा न कर, कर्मजनित नास्त्यः विना पर्यायों की जीवस्वरूप बतलाने वाला नय अनित्य-अशुद्ध-पर्यायाधिक नय है।

प्राकृत नयचक्र में भी कहा है—

भणइ अणिञ्चासुद्धा चउगइजीवाणं पज्जया जो हु ।

होइ विभावअणिञ्चो असुद्धओ पज्जयत्थिणओ ॥२०४॥

[पृ. ७१]

अर्थात्—जो नय संसारी जीवों की चतुर्भिः मन्वन्थी प्रविष्ट एव अशुद्ध पर्यायों को ग्रहण करता है वह विभाव-अनित्य-अशुद्ध-पर्यायाधिक नय है ।

॥ इस प्रकार पर्यायाधिक नय के छह भेदों का निरूपण हुआ ॥

—♦—

नैगमस्त्रेधा भूतभावि वर्तमानकालभेदात् ॥६४॥





संस्कृत नय चक्र में भी कहा है—

अनिष्पन्नं क्रियारूपं निष्पन्नं गदति स्फुटं ।

नैगमो वर्तमानः स्यादोदनं पच्यते यथा ॥२॥ [पृ० १२]

अर्थात्—अपूर्ण क्रियारूप को जो निष्पन्न-पूर्ण बतलाता है वह वर्तमान नैगमनय है । जैसे—भात पकाया जाता है ।

‘वसन्ति करोमि, ओदनं पचवानं पचामि, वाहं करोमीत्यादि-  
निष्पन्नक्रियाविशेषानुद्दिश्य निष्पन्ना इति वदनं वर्तमाननैगमनयः ।’ [पृ० १२]

अर्थ—मैं वसति का बनाता हूँ, भात को, पचवान को पकाता हूँ, इत्यादि-  
अपूर्ण क्रिया विशेषों को लक्ष्य करके ‘पक गये’ ऐसा कहता वर्तमान नैगम  
नय है ।

॥ इस प्रकार नैगम नय के तीनों भेदों का निरूपण हुआ ।



अर्थ—जीव समूह, सजीव समूह, जगित्तों का समूह, मोहों का समूह, रसों का समूह, पैरल जगते का समूह, मंत्रियों का समूह, मित्र, जामुन, आम व नागिन का समूह; इसी प्रकार जितान, नगिकम्पेठ, कोटपान आदि अठारह श्रेणी के निम्न दशादिक दृष्टान्तों के द्वारा प्रत्येक जाति के समूह को नियम से एकवचन द्वारा स्वीकार करके नयन करना विशेष संग्रह नय है।

॥ इस प्रकार संग्रह नय के दोनों भेदों का कथन हुआ ॥

### व्यवहारोऽपि द्वेवा ॥७१/१॥

मूत्रार्थ—व्यवहारनय भी दो प्रकार का है (१) सामान्य (२) विशेष।

विशेषार्थ—संस्कृत नयचक्र में कहा भी है—

यः संग्रहप्रदोत्तार्ये शुद्धाशुद्धे विभेदकः।

शुद्धाशुद्धाभिधानेन व्यवहारो द्विवा मतः ॥१७॥ [पृ० ४२]

अर्थ—शुद्ध (सामान्य) संग्रह नय द्वारा ग्रहीत अर्थ की भेदक तथा अशुद्ध (विशेष) संग्रह नय द्वारा ग्रहीत अर्थ की भेदक व्यवहार नय भी शुद्ध, अशुद्ध (सामान्य, विशेष) के अभिधान में दो प्रकार का है।

सामान्य व्यवहार नय का स्वरूप—

सामान्यसंग्रहभेदको व्यवहारो यथा द्रव्याणि जीवाजीवाः

॥७१/२॥

मूत्रार्थ—सामान्यसंग्रह नय के विषयभूत पदार्थ में भेद करने वाला सामान्यसंग्रहभेदक व्यवहारनय है। जैसे—द्रव्य के दो भेद हैं—जीव और अजीव।

विशेषार्थ—संस्कृत नयचक्र में इस नय का स्वरूप इस प्रकार कहा है—

सामान्यसंग्रहस्यार्थे जीवाजीवादि भेदतः।

भिनन्ति व्यवहारोऽयं शुद्धसंग्रहभेदकः ॥१॥ [पृ० १५]

अनेन सामान्यसंग्रहनयेन स्वीकृतसत्ता सामान्यरूपार्थं भित्वा जीवपुद्गलादिकथनं, सेनाशब्देन स्वीकृतार्थं भित्वा हस्त्यश्वरथपदाति-







स्युलकृत नय नय है । जैसे — मनुष्यादि पदार्थों आदिके आदिके आदिके पदार्थों का नय नय है ।

विनिर्णय — नर-नारक में मनुष्य आदि नय नय का नय नय है ।

सुगन्धादयमनयायो ममसुगन्धि ममसुगन्धि नय नय ।

जो भगवत् नयनकालं गो शूलो होइ रिज्जुतो ॥२१॥ [पृ० ३३]

अर्थात्—आदिके विनिर्णय पदार्थों में नय नय मनुष्य आदि पदार्थों को नय नय नय नय नय मनुष्य आदि कहता है यह मनुष्यनय नय है ।

मनुष्य नयनक में इस प्रकार कहा है—

यो नरादिकपर्यायं स्वकीयभित्तिननेन ।

तावत्कालं तथा चण्डे स्थूलकृजुसूत्रकः ॥२६॥ [पृ० ४२]

मनुष्यादि पदार्थों आदिके-आदिके विनिर्णय काल तक रहती है । उनसे काल तक मनुष्य आदि कहना स्थूलकृजुसूत्र नय है ।

‘नरनारकादिघटपटादिव्यंजनपर्यायेषु नोवपुद्गलाभिवानरूप-  
वस्तूनि परिणतानीति स्थूलकृजुसूत्रनयः [पृ० १६] । व्यंजनपर्याया-  
पेक्षया प्रारम्भतः प्रारम्भ्य अवसान यावद्भवतीति निश्चयः कर्तव्य  
इति तात्पर्यम् ।’ [पृ० १७]

अर्थ—नर-नारक आदि और घट-पट आदि व्यंजन पदार्थों में जीव और पुद्गल नामक पदार्थ परिणत हुए हैं । इस प्रकार का विषय स्थूलकृजुसूत्र नय का है । व्यंजनपर्याय की अपेक्षा प्रारम्भ से अवसान तक वर्तमान पर्याय निश्चय करता चाहिये ।

॥ इस प्रकार कृजुसूत्र नय के दोनों भेदों का कथन हुआ ॥

शब्दसमभिरुद्धेवंभूता नयाः प्रत्येकमेकैका नयाः ॥७६॥

सूत्रार्थ—शब्द नय, समभिरुद्ध नय और एवंभूत नय इन तीनों नयों में से प्रत्येक नय एक एक प्रकार का है । शब्द नय एक प्रकार का है, समभिरुद्ध





आदि के दोष को दूर करता है। दूसरा मत है कि शब्द नय की दृष्टि लिंग, संख्या, साधन आदि का दोष नहीं है।

**समभिरूढनयो यथा गीः पशुः ॥७८॥**

सूत्रार्थ—नाना अर्थों को 'सम' अर्थात् छोड़कर प्रधानता से एक अर्थ में रूढ होता है वह समभिरूढ है। जैसे—'गी' शब्द के वचन आदि अनेक अर्थ पाये जाते हैं तथापि वह 'पशु' अर्थ में रूढ है।

विशेषार्थ—समभिरूढ नय का स्वरूप विस्तारपूर्वक सूत्र ४१ की टीका में कहा जा चुका है। आगे सूत्र २०१ में भी इसका लक्षण कहेंगे।

**एवंभूतनयो यथा इन्दतीति इन्द्रः ॥७९॥**

सूत्रार्थ—जिस नय में वर्तमान क्रिया ही प्रधान होती है वह एवंभूतनय है। जैसे—जिस समय देवराज इन्दन क्रिया को करता है उस समय ही इस नय की दृष्टि में वह इन्द्र है।

विशेषार्थ—सूत्र ४१ की टीका में एवंभूत नय का स्वरूप सविस्तार कहा जा चुका है। आगे सूत्र २०२ में भी इसका स्वरूप कहा जायगा।

॥ द्रव्यार्थिक नय के १० भेद, पर्य्यायिक नय के ६ भेद, नैगम नय के ३ भेद, संप्रहृणय के २ भेद, व्यवहार नय के २ भेद, ऋजुसूत्र नय के २ भेद, शब्द नय, समभिरूढनय और एवंभूतनय ये तीन, इस प्रकार नय के २८ भेदों का कथन हुआ ॥



**उपनयभेदा उच्यन्ते ॥८०॥**

सूत्रार्थ—उपनय के भेदों को कहते हैं।

विशेषार्थ—उपनय का लक्षण सूत्र ४३ में कहा जा चुका है। उसके तीन मूल भेद हैं—१. सदभूत, २. असदभूत, ३. उपचरित असदभूत व्यवहारनय।

**सदभूतव्यवहारो द्विधा ॥८१॥**

सूत्रार्थ—सदभूत व्यवहारनय दो प्रकार का है।



विभागैकलक्षणं कथयन् अशुद्धसद्भूतव्यवहारोपनयः ।'

[संस्कृत नयचक्र पृ० ११]

अर्थात्—संज्ञा, लक्षण, प्रयोजन के द्वारा भेद करके अशुद्ध द्रव्य में शुद्ध और गुणी के विभाग रूप मुख्य लक्षण को कहने वाला अशुद्ध-सद्भूतव्यवहार नय है ।

॥ इस प्रकार सद्भूत-व्यवहारनय के दोनों भेदों का कथन हुआ ॥

असद्भूतव्यवहारस्त्रेधा ॥८४॥

सूत्रार्थ—असद्भूतव्यवहारनय तीन प्रकार की है ।

विशेषार्थ—असद्भूत व्यवहारनय का लक्षण सूत्र ४४ की टीका में कहा जा चुका है और आगे भी सूत्र २०७ में कहेंगे । संस्कृत नयचक्र में भी कहा है—

‘यदन्यस्य प्रसिद्धस्य धर्मस्यान्यत्र कल्पना असद्भूतो भवेद्भावः ।’  
[पृ० २१]

अर्थ—अन्य के प्रसिद्ध धर्म को किसी अन्य में कल्पित करना सो असद्भूत-व्यवहारनय है ।

असद्भूतव्यवहारनय के तीन भेद हैं—(१) स्वजात्यसद्भूतव्यवहारनय, (२) विजात्यसद्भूतव्यवहारनय, (३) स्वजातिविजात्यसद्भूतव्यवहारनय ।

स्वजात्यसद्भूतव्यवहारनय का लक्षण—

स्वजात्यसद्भूतव्यवहारो यथा परमाणुर्वहुप्रदेशीति कथन-मित्यादि ॥८५॥

सूत्रार्थ—स्वजाति-असद्भूत-व्यवहारनय जैसे परमाणु को बहुप्रदेशी कहना, इत्यादि ।

विशेषार्थ—जो नय स्वजातीय द्रव्यादिक में स्वजातीय द्रव्यादि के सम्बन्ध में होने वाले धर्म का आरोपण करता है वह स्वजात्यसद्भूतव्यवहारनय है ।

जैसे—परमाणु बहुप्रदेशी है । परमाणु अन्य परमाणुओं के सम्बन्ध में बहु-



## गुण-व्युत्पत्ति अधिकार

सहभुवो गुणाः, क्रमवर्तिनः पर्यायाः ॥६२॥

सूत्रार्थ—साथ में होने वाले गुण हैं और क्रम क्रम से होने वाली पर्यायें हैं । अर्थात् अन्वयी गुण हैं और व्यतिरेक परिणाम पर्यायें हैं ।

विशेषार्थ—संस्कृत नयचक्र में पृ० ५७ पर भी कहा है—

‘सहभुवो गुणाः । क्रमभाविनः पर्यायाः ।’

अर्थ—साथ में होने वाला गुण है और क्रमवर्ती पर्यायें हैं ।

ऐसा नहीं है कि द्रव्य पहिले हो और बाद में गुणों से सम्बन्ध हुआ हो । किन्तु द्रव्य और गुण अनादि काल से हैं, इनका कभी भी विच्छेद नहीं होता है अतः गुण का लक्षण ‘सहभुवः’ कहा है । अथवा जो निरन्तर द्रव्य में रहते हैं और अन्य गुण से रहित हैं वे गुण हैं । [मोक्षशास्त्र ५/४१]

विशेष गुण का लक्षण—

गुण्यते पृथक्क्रियते द्रव्यं द्रव्याद्यस्तेगुणाः ॥६३॥

सूत्रार्थ—जिनके द्वारा एक द्रव्य दूसरे द्रव्य से पृथक् किया जाता है, वे (विशेष) गुण कहलाते हैं ।

विशेषार्थ—संस्कृत नयचक्र पृ० ५७ पर भी कहा है—

‘गुणव्युत्पत्तिर्गुण्यते पृथक् क्रियते द्रव्याद्द्रव्यं येनासौ विशेष-गुणः ।’

अर्थ—जिसके द्वारा एक द्रव्य दूसरे द्रव्य से पृथक् किया जाता है वह विशेषगुण है, यह गुण का व्युत्पत्ति अर्थ है ।

सामान्यगुण और विशेषगुण के भेद से गुण दो प्रकार के हैं । सामान्य-गुण सब द्रव्यों में पाये जाते हैं । उन सामान्यगुणों के द्वारा तो एक द्रव्य दूसरे द्रव्य से पृथक् नहीं किया जा सकता, विशेषगुणों के द्वारा ही एक द्रव्य दूसरे द्रव्य से पृथक् किया जा सकता है । अतः गुण का यह व्युत्पत्ति अर्थ विशेष गुण में ही घटित होता है और ‘सहभुवो गुणाः’ अथवा ‘द्रव्याश्रया

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

13

14

15

16

17

18

19

20

21

22

23

24

25

26

27

28

29

30

31

32

33

34

35

36

37

38

39

40

41

42

43

44

45

46

47

48

49

50

51

52

53

54

55

56

57

58

59

60

61

62

63

64

65

66

67

68

69

70

71

72

73

74

75

76

77

78

79

80

81

82

83

84

85

86

87

88

89

90

91

92

93

94

95

96

97

98

99

100

उप आकाश प्रदेश के भाव को अर्पण, अपाण, आकाश, और  
उप और आकाश में प्रदेशों को मण्डल की जाती है ।

चेतनस्य भावोऽचेतनत्वम् अचेतनमनुभवनम् ॥१०१॥

चेतनमनुभूतिः स्यात् सा क्रियास्वमेव च ।

क्रिया मनोऽनन्तकामेऽनन्विता वर्तते ध्रुवम् ॥६॥

सूत्रार्थ—चेतन के भाव को अर्थात् पदार्थों के अनुभवन को चेतनत्व  
कहते हैं ।

भाषार्थ—चेतन नाम अनुभूति का है । वह अनुभूति क्रियास्व प्रपञ्च  
कर्तव्यस्वभाव ही होती है । मन, अमन, काम में अन्वित (सहित) वह क्रिया  
निरप्य होती रहती है ।

विशेषार्थ—जीवाजीवादि पदार्थों के अनुभवन को, जानने को चेतना  
कहते हैं । वह अनुभवन ही अनुभूति है । अथवा द्रव्यस्वरूप चित्त को अनु-  
भूति कहते हैं । श्री अमृतसन्धानाय ने पञ्चास्तिकाय गाथा ३६ की टीका में  
लिखा है—

चेतयन्ते अनुभवन्ति उपलभन्ते विदन्तीत्येकार्थाश्चेतनानुभूत्युप-  
लब्धिवेदनानामेकार्थत्वात् ।

अर्थ—चेतना है, अनुभव करता है, उपलब्ध करता है और वेदता है  
ये एकार्थ हैं क्योंकि चेतना, अनुभूति, उपलब्धि और वेदना का एकार्थ है ।

अचेतनस्य भावोऽचेतनत्वमचेतन्यमननुभवनम् ॥१०२॥

सूत्रार्थ—अचेतन के भाव को अर्थात् पदार्थों के अनुभवन को अचेतनत्व  
कहते हैं ।

विशेषार्थ—जीव के अतिरिक्त पुद्गल, घर्म, अघर्म, आकाश और काल  
ये पाँचों द्रव्य अचेतन हैं, जड़ हैं, क्योंकि इनमें जानने की शक्ति अर्थात् अनु-  
भवन का अभाव है ।

मूर्तस्य भावो मूर्तत्वं रूपादिमत्त्वम् ॥१०३॥

[illegible]



अर्थात्—परस्परता की अपेक्षा अभाव होने से नास्तिस्वभाव है ।

सूत्र में 'अभावात्' शब्द का अर्थ अभवनात् है ।

निज-निज-नानापर्यायेषु तदेवेदमिति द्रव्यस्योपलम्भान्नित्य-

स्वभावः ॥१०८॥

सूत्रार्थ—अपनी अपनी नाना पर्यायों में 'यह वही है' इस प्रकार द्रव्य की प्राप्ति 'नित्य स्वभाव' है ।

विशेषार्थ—द्रवत्व अंश की अपेक्षा से अथवा सामान्य अंश की अपेक्षा से द्रव्य नित्य स्वभावी है जो द्रव्याधिक नय का विषय है । अर्थात् द्रव्याधिक नय की अपेक्षा द्रव्य नित्य है ।

तस्याप्यनेकपर्यायपरिणामितत्वादन्नित्यस्वभावः ॥१०९॥

सूत्रार्थ—उस द्रव्य का अनेक पर्यायरूप परिणत होने से अनित्य स्वभाव है ।

विशेषार्थ—प्रतिसमय उत्पाद व्यय की दृष्टि से द्रव्य परिणमनशील होने से अथवा पर्यायाधिक नय की अपेक्षा द्रव्य अनित्यस्वभावी है । प्रमाण की अपेक्षा द्रव्य नित्यानित्यात्मक है ।

स्वभावानामेकाधारत्वादेकस्वभावः ॥११०॥

सूत्रार्थ—सम्पूर्ण स्वभावों का एक आधार होने से एक स्वभाव है ।

विशेषार्थ—अनेक गुणों, पर्यायों और स्वभावों का एक द्रव्य सामान्य आधार होने से द्रव्य एक स्वभावी है । संस्कृत नयचक्र पृ० ६५ पर कहा भी है—  
'सामान्यरूपेणैकत्वमिति ।'

अर्थात्—सामान्य की अपेक्षा एक स्वभाव है ।

एकस्याप्यनेकस्वभावोपलम्भादनेक स्वभावः ॥१११॥

सूत्रार्थ—एक ही द्रव्य के अनेक स्वभावों की उपलब्धि होने से 'अनेक स्वभाव' है ।

विशेषार्थ—एक ही द्रव्य नाना गुणों, पर्यायों और स्वभावों का आधार

121

1. 1950年10月1日，中华人民共和国成立，标志着中国历史进入了一个新的纪元。

1. 1945年10月1日，日本帝国主义无条件投降，中国人民抗日战争取得最后胜利。
 2. 1946年6月，国民党当局撕毁停战协定，发动内战，中国内战爆发。
 3. 1947年7月，国民党当局宣布《动员戡乱时期临时条款》，实行戒严，内战进入全面阶段。
 4. 1948年9月，国民党当局宣布《动员戡乱时期临时条款》修正草案，进一步扩大戒严范围。
 5. 1949年4月，国民党当局宣布《动员戡乱时期临时条款》修正草案，进一步扩大戒严范围。
 6. 1950年6月，朝鲜战争爆发，美国出兵朝鲜，中国志愿军入朝参战。
 7. 1953年7月，朝鲜战争停战协定签署，朝鲜战争结束。
 8. 1954年4月，中美两国签订《中美共同防御条约》，美国承诺在台湾海峡使用武力。
 9. 1955年4月，万隆会议召开，中国提出和平共处五项原则。
 10. 1956年9月，中国共产党第八次全国代表大会召开，提出社会主义改造总路线。
 11. 1958年5月，中国共产党提出“鼓足干劲，力争上游，多快好省地建设社会主义”的总路线。
 12. 1959年6月，中国共产党提出“大跃进”运动，全国掀起大跃进高潮。
 13. 1960年7月，中苏两国关系恶化，中苏边境冲突不断。
 14. 1961年1月，中国共产党八届十二中全会通过《关于无产阶级专政下继续革命的总路线》，提出“以阶级斗争为纲”。
 15. 1966年5月，中国共产党八届十二中全会通过《关于无产阶级专政下继续革命的总路线》，提出“以阶级斗争为纲”。
 16. 1966年6月，文化大革命爆发，全国掀起“红卫兵”运动。
 17. 1969年4月，中国共产党第九次全国代表大会召开，提出“以阶级斗争为纲”。
 18. 1971年7月，中美两国关系正常化，尼克森总统访华。
 19. 1972年9月，中日两国关系正常化，田中首相访华。
 20. 1976年9月，毛泽东主席逝世，中国进入“四人帮”专政时期。
 21. 1978年12月，中国共产党十一届三中全会召开，提出改革开放政策。
 22. 1982年9月，中国共产党第十二次全国代表大会召开，提出“一个中心，两个基本点”的基本路线。
 23. 1987年3月，中国共产党第十三次全国代表大会召开，提出“一个中心，两个基本点”的基本路线。
 24. 1992年10月，中国共产党第十四次全国代表大会召开，提出“一个中心，两个基本点”的基本路线。
 25. 1997年9月，中国共产党第十五次全国代表大会召开，提出“一个中心，两个基本点”的基本路线。
 26. 2002年11月，中国共产党第十六次全国代表大会召开，提出“一个中心，两个基本点”的基本路线。
 27. 2007年10月，中国共产党第十七次全国代表大会召开，提出“一个中心，两个基本点”的基本路线。
 28. 2012年11月，中国共产党第十八次全国代表大会召开，提出“一个中心，两个基本点”的基本路线。
 29. 2017年10月，中国共产党第十九次全国代表大会召开，提出“一个中心，两个基本点”的基本路线。
 30. 2022年10月，中国共产党第二十次全国代表大会召开，提出“一个中心，两个基本点”的基本路线。

1. 凡在本行开立存款账户的客户，均可向本行申请开立定期存款账户。  
 2. 定期存款账户的开立，须由客户填写《定期存款开户申请书》，并提供有效身份证件。  
 3. 本行定期存款账户分为整存整付、零存整付、整存零付、零存零付四种类型。  
 4. 定期存款的期限分为三个月、六个月、九个月、十二个月、十八个月、二十四个月、三十六个月、四十八个月、六十个月、七十二个月、八十四个月、九十六个月、一百零八个月、一百二十个月。  
 5. 定期存款的利率按中国人民银行规定的利率执行，具体利率以本行公布的利率表为准。  
 6. 定期存款账户的开立，须由客户本人或授权代理人办理，不得代办。  
 7. 定期存款账户的开立，须由客户本人或授权代理人填写《定期存款开户申请书》，并提供有效身份证件。  
 8. 定期存款账户的开立，须由客户本人或授权代理人填写《定期存款开户申请书》，并提供有效身份证件。  
 9. 定期存款账户的开立，须由客户本人或授权代理人填写《定期存款开户申请书》，并提供有效身份证件。  
 10. 定期存款账户的开立，须由客户本人或授权代理人填写《定期存款开户申请书》，并提供有效身份证件。



1 18

अभाव हो जायगा । अर्थक्रियाकारित्व का अभाव हो जाने से द्रव्य का भी अभाव हो जायगा । श्री गणेशप्रसादाचार्य ने प्रवचनसार गाथा ११० की टीका में कहा भी है—

‘न नानु द्रव्यात्मगम्भूतो गुण इति वा पर्याय इति वा कश्चिदपि  
स्यात् । यथा गुणगोत्पन्नगम्भूतं तत्पीतत्वादिकमिति वा तत्कुण्डलादि-  
फलमिति वा ।’

अर्थ—निश्चय नय से द्रव्य से पृथग्भूत कोई भी गुण वा पर्याय नहीं होती । जैसे—गुणगुं का पीलापन गुण तथा कुण्डलादि पर्यायें सुवर्ण से पृथग्भूत नहीं होती ।

अभेदपक्षेऽपि सर्वेषामेकत्वम्, सर्वेषामेकत्वेऽर्थक्रियाकारि-  
त्वाभावः, अर्थक्रियाकारित्वाभावे द्रव्यस्याप्यभावः ॥१३४॥

सूत्रार्थ—यद्यथा अभेद पक्ष में गुण-गुणी, पर्याय-पर्यायी सम्पूर्ण पदार्थ एक रूप हो जायेंगे । सम्पूर्ण पदार्थों के एक रूप हो जाने पर अर्थक्रियाकारित्व का अभाव हो जायगा और अर्थक्रियाकारित्व के अभाव में द्रव्य का भी अभाव हो जायगा ।

विशेषार्थ—प्रवचनसार गाथा २७ की टीका में श्री जयसेन आचार्य ने कहा है—

‘यदि पुनरेकान्तेन ज्ञानमात्मेति भण्यते तदा ज्ञानगुणमात्र  
एवात्मा प्राप्तः सुखादिधर्माणामवकाशो नास्ति । तथा सुखवीर्यादि-  
धर्मसमूहाभावादात्माऽभावः, आत्मन आधारभूतस्याभावादाधेय-  
भूतस्य ज्ञानगुणस्याप्यभावः, इत्येकान्ते सति द्वयोरप्यभावः ।’

अर्थ—यदि एकान्त से ज्ञान ही आत्मा है, ऐसा कहा जाय तब ज्ञानगुण मात्र ही आत्मा प्राप्त होगा, फिर सुख आदि स्वभावों का अवकाश नहीं रहेगा तथा सुख, वीर्य आदि स्वभावों के समुदाय का अभाव होने से आत्मा का अभाव हो जायगा । जब आधारभूत आत्मा का अभाव हो गया, तब



व्याज, व्योम आदि का अभाव हो जायगा, क्योंकि बुद्ध्यादि का अभाव ही  
 मन्त्रको प्राप्ति के लिये हो व्याज की आवश्यकता होती है ।

सर्वथाशब्दः सव्यप्रकारवाची, अथवा सर्वकालवाच  
 अथवा नियमवाची वा, अनेकान्तसापेक्षी वा ? यदि सर्वप्रका  
 वाची सर्वकालवाची अनेकान्तवाची वा, सर्वादिगणो पठनात्  
 सर्वशब्द, एवं विधश्चेत्तर्हि सिद्धं नः समीहितम् । अथवा  
 नियमवाची चेत्तर्हि सकलार्थानां तत्र प्रतीतिः कथं स्यात् ?  
 नित्यः अनित्यः एकः अनेकः भेदः अभेदः कथं प्रतीतिः  
 स्यात् नियमितपक्षत्वात् ? ॥१४०॥

... (faint, mostly illegible text) ...

... (faint, mostly illegible text) ...

... (faint, mostly illegible text) ...

... (faint, mostly illegible text) ...



विशेषार्थ—सूत्र ३५ में, प्रत्यक्ष और परोक्ष—प्रमाण के ऐसे दो भेद किये गये थे। यहाँ पर सविकल्प और निविकल्प की अपेक्षा प्रमाण के दो भेद किये गये हैं। जिस ज्ञान में प्रयत्नपूर्वक, विचारपूर्वक या इच्छापूर्वक पदार्थ को जानने के लिये उपयोग लगाना पड़े वह सविकल्प है। इससे विपरीत निविकल्प है।

सविकल्प ज्ञान का लक्षण तथा भेद—

सविकल्पं मानसं तच्चतुर्विवम् मतिश्रुतावचिमतःपर्ययरूपम् ॥१७६॥

सूत्रार्थ—मानस अर्थात् विचार या इच्छा सहित ज्ञान सविकल्प ज्ञान है। वह चार प्रकार का है—१. मतिज्ञान, २. श्रुतज्ञान, ३. अवधिज्ञान, ४. मनःपर्ययज्ञान।

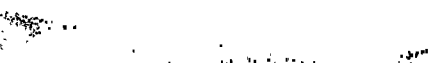
विशेषार्थ—मतिज्ञान और श्रुतज्ञान का कथन सूत्र ३८ में और अवधि, मनःपर्यय ज्ञान का कथन सूत्र ३६ में हो चुका है। ये चारों ज्ञान विचार-सहित या इच्छा सहित होते हैं इसलिये इनको सविकल्प कहा है। यहाँ पर मन का अर्थ इच्छा या विचार है।

निविकल्पं मनोरहितं केवलज्ञानम् ॥१८०॥

सूत्रार्थ—मन रहित अथवा विचार या इच्छा रहित ज्ञान निविकल्प ज्ञान है। केवलज्ञान निविकल्प है।

विशेषार्थ—सूत्र ३७ में केवलज्ञान का कथन है। सूत्र १७६ व १८० में विकल्प का अर्थ मन किया है। यहाँ मन से अभिप्राय इच्छा या विचार का है। केवलज्ञान इच्छा या विचार रहित होना है, अतः केवलज्ञान को मनोरहित अर्थात् निविकल्प कहा गया है।

॥ इस प्रकार प्रमाण व्युत्पत्ति का कथन हुआ ॥





本報為便利讀者起見，特在各大城市設立代售處，以便讀者隨時隨地購買。本報之宗旨，在於報導國內外大事，提供讀者豐富之資訊。

本報之內容，包括新聞、評論、專欄、小說、詩歌等。本報之風格，力求客觀、公正、深入、淺出。本報之服務，力求周到、迅速、準確、可靠。

本報之發行，每日早晨六時開始，每日下午六時結束。本報之訂閱，可分為月刊、季刊、半年刊、年刊等。本報之廣告，可分為報頭、報尾、報中、報外等。

本報之地址，設於本市中區某某路某某號。本報之電話，某某某某某某。本報之電報掛號，某某某某某某。本報之郵政掛號，某某某某某某。

本報之宗旨，在於報導國內外大事，提供讀者豐富之資訊。本報之內容，包括新聞、評論、專欄、小說、詩歌等。本報之風格，力求客觀、公正、深入、淺出。本報之服務，力求周到、迅速、準確、可靠。

本報之發行，每日早晨六時開始，每日下午六時結束。本報之訂閱，可分為月刊、季刊、半年刊、年刊等。本報之廣告，可分為報頭、報尾、報中、報外等。

本報之地址，設於本市中區某某路某某號。本報之電話，某某某某某某。本報之電報掛號，某某某某某某。本報之郵政掛號，某某某某某某。

本報之宗旨，在於報導國內外大事，提供讀者豐富之資訊。本報之內容，包括新聞、評論、專欄、小說、詩歌等。本報之風格，力求客觀、公正、深入、淺出。本報之服務，力求周到、迅速、準確、可靠。

本報之發行，每日早晨六時開始，每日下午六時結束。本報之訂閱，可分為月刊、季刊、半年刊、年刊等。本報之廣告，可分為報頭、報尾、報中、報外等。

本報之地址，設於本市中區某某路某某號。本報之電話，某某某某某某。本報之電報掛號，某某某某某某。本報之郵政掛號，某某某某某某。

सूत्रार्थ—परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल, परस्वभाव अर्थात् परचतुष्टय को ग्रहण करना जिसका प्रयोजन है वह परद्रव्यादिग्राहक द्रव्याधिक नय है ।

विशेषार्थ—इसका विशेष कथन सूत्र ५५ में है ।

परमभावग्रहणमर्थः प्रयोजनमस्येति परमभावग्राहकः

॥१६०॥

सूत्रार्थ—परमभावग्रहण करना जिसका प्रयोजन है वह परमभाव द्रव्याधिक नय है ।

विशेषार्थ—इस नय का विशेष कथन सूत्र ५६ में है ।

॥ इस प्रकार द्रव्याधिक नय की व्युत्पत्ति का कथन हुआ ॥

### पर्यायाधिक नय का कथन

पर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येति पर्यायाधिकः ॥१६१॥

सूत्रार्थ—पर्याय ही जिनका प्रयोजन है वह पर्यायाधिक नय है ।

विशेषार्थ—सूत्र ४१ के विशेषार्थ में इसका विशेष कथन है ।

अनादिनित्यपर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येत्यानादिनित्य-पर्यायाधिकः ॥१६२॥

सूत्रार्थ—अनादि, नित्य पर्याय जिनका प्रयोजन है वह अनादि-नित्य पर्यायाधिक नय है ।

विशेषार्थ—मेघ आदि, पुद्गल द्रव्य की अनादि-नित्य पर्याय है । इस नय का विशेष कथन सूत्र ५८ में है ।

सादिनित्यपर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येति सादिनित्यपर्यायाधिकः ॥१६३॥

1. 凡在本行开立存款账户的存款人，均可向本行申请开立支票。

一、本會之宗旨，在於研究我國經濟，以謀國家之富強，及社會之進步。

\_\_\_\_\_

8. 1941. 1942. 1943. 1944. 1945. 1946. 1947. 1948. 1949. 1950. 1951. 1952. 1953. 1954. 1955. 1956. 1957. 1958. 1959. 1960. 1961. 1962. 1963. 1964. 1965. 1966. 1967. 1968. 1969. 1970. 1971. 1972. 1973. 1974. 1975. 1976. 1977. 1978. 1979. 1980. 1981. 1982. 1983. 1984. 1985. 1986. 1987. 1988. 1989. 1990. 1991. 1992. 1993. 1994. 1995. 1996. 1997. 1998. 1999. 2000. 2001. 2002. 2003. 2004. 2005. 2006. 2007. 2008. 2009. 2010. 2011. 2012. 2013. 2014. 2015. 2016. 2017. 2018. 2019. 2020. 2021. 2022. 2023. 2024. 2025. 2026. 2027. 2028. 2029. 2030. 2031. 2032. 2033. 2034. 2035. 2036. 2037. 2038. 2039. 2040. 2041. 2042. 2043. 2044. 2045. 2046. 2047. 2048. 2049. 2050. 2051. 2052. 2053. 2054. 2055. 2056. 2057. 2058. 2059. 2060. 2061. 2062. 2063. 2064. 2065. 2066. 2067. 2068. 2069. 2070. 2071. 2072. 2073. 2074. 2075. 2076. 2077. 2078. 2079. 2080. 2081. 2082. 2083. 2084. 2085. 2086. 2087. 2088. 2089. 2090. 2091. 2092. 2093. 2094. 2095. 2096. 2097. 2098. 2099. 2100. 2101. 2102. 2103. 2104. 2105. 2106. 2107. 2108. 2109. 2110. 2111. 2112. 2113. 2114. 2115. 2116. 2117. 2118. 2119. 2120. 2121. 2122. 2123. 2124. 2125. 2126. 2127. 2128. 2129. 2130. 2131. 2132. 2133. 2134. 2135. 2136. 2137. 2138. 2139. 2140. 2141. 2142. 2143. 2144. 2145. 2146. 2147. 2148. 2149. 2150. 2151. 2152. 2153. 2154. 2155. 2156. 2157. 2158. 2159. 2160. 2161. 2162. 2163. 2164. 2165. 2166. 2167. 2168. 2169. 2170. 2171. 2172. 2173. 2174. 2175. 2176. 2177. 2178. 2179. 2180. 2181. 2182. 2183. 2184. 2185. 2186. 2187. 2188. 2189. 2190. 2191. 2192. 2193. 2194. 2195. 2196. 2197. 2198. 2199. 2200. 2201. 2202. 2203. 2204. 2205. 2206. 2207. 2208. 2209. 2210. 2211. 2212. 2213. 2214. 2215. 2216. 2217. 2218. 2219. 2220. 2221. 2222. 2223. 2224. 2225. 2226. 2227. 2228. 2229. 2230. 2231. 2232. 2233. 2234. 2235. 2236. 2237. 2238. 2239. 2240. 2241. 2242. 2243. 2244. 2245. 2246. 2247. 2248. 2249. 2250. 2251. 2252. 2253. 2254. 2255. 2256. 2257. 2258. 2259. 2260. 2261. 2262. 2263. 2264. 2265. 2266. 2267. 2268. 2269. 2270. 2271. 2272. 2273. 2274. 2275. 2276. 2277. 2278. 2279. 2280. 2281. 2282. 2283. 2284. 2285. 2286. 2287. 2288. 2289. 2290. 2291. 2292. 2293. 2294. 2295. 2296. 2297. 2298. 2299. 2300. 2301. 2302. 2303. 2304. 2305. 2306. 2307. 2308. 2309. 2310. 2311. 2312. 2313. 2314. 2315. 2316. 2317. 2318. 2319. 2320. 2321. 2322. 2323. 2324. 2325. 2326. 2327. 2328. 2329. 2330. 2331. 2332. 2333. 2334. 2335. 2336. 2337. 2338. 2339. 2340. 2341. 2342. 2343. 2344. 2345. 2346. 2347. 2348. 2349. 2350. 2351. 2352. 2353. 2354. 2355. 2356. 2357. 2358. 2359. 2360. 2361. 2362. 2363. 2364. 2365. 2366. 2367. 2368. 2369. 2370. 2371. 2372. 2373. 2374. 2375. 2376. 2377. 2378. 2379. 2380. 2381. 2382. 2383. 2384. 2385. 2386. 2387. 2388. 2389. 2390. 2391. 2392. 2393. 2394. 2395. 2396. 2397. 2398. 2399. 2400. 2401. 2402. 2403. 2404. 2405. 2406. 2407. 2408. 2409. 2410. 2411. 2412. 2413. 2414. 2415. 2416. 2417. 2418. 2419. 2420. 2421. 2422. 2423. 2424. 2425. 2426. 2427. 2428. 2429. 2430. 2431. 2432. 2433. 2434. 2435. 2436. 2437. 2438. 2439. 2440. 2441. 2442. 2443. 2444. 2445. 2446. 2447. 2448. 2449. 2450. 2451. 2452. 2453. 2454. 2455. 2456. 2457. 2458. 2459. 2460. 2461. 2462. 2463. 2464. 2465. 2466. 2467. 2468. 2469. 2470. 2471. 2472. 2473. 2474. 2475. 2476. 2477. 2478. 2479. 2480. 2481. 2482. 2483. 2484. 2485. 2486. 2487. 2488. 2489. 2490. 2491. 2492. 2493. 2494. 2495. 2496. 2497. 2498. 2499. 2500. 2501. 2502. 2503. 2504. 2505. 2506. 2507. 2508. 2509. 2510. 2511. 2512. 2513. 2514. 2515. 2516. 2517. 2518. 2519. 2520. 2521. 2522. 2523. 2524. 2525. 2526. 2527. 2528. 2529. 2530. 2531. 2532. 2533. 2534. 2535. 2536. 2537. 2538. 2539. 2540. 2541. 2542. 2543. 2544. 2545. 2546. 2547. 2548. 2549. 2550. 2551. 2552. 2553. 2554. 2555. 2556. 2557. 2558. 2559. 2560. 2561. 2562. 2563. 2564. 2565. 2566. 2567. 2568. 2569. 2570. 2571. 2572. 2573. 2574. 2575. 2576. 2577. 2578. 2579. 2580. 2581. 2582. 2583. 2584. 2585. 2586. 2587. 2588. 2589. 2590. 2591. 2592. 2593. 2594. 2595. 2596. 2597. 2598. 2599. 2600. 2601. 2602. 2603. 2604. 2605. 2606. 2607. 2608. 2609. 2610. 2611. 2612. 2613. 2614. 2615. 2616. 2617. 2618. 2619. 2620. 2621. 2622.

[illegible]

*(The following text is handwritten and largely illegible due to extreme blurriness. It appears to contain several lines of mathematical or scientific notation.)*

Figure 1. The effect of the concentration of the *Agrobacterium* suspension on the transformation efficiency of *Agrobacterium* strains. The number of transformed cells was determined by the number of colonies obtained on the selective medium. The results are the mean of three independent experiments. Error bars represent standard deviation.

1. 凡在本市行政区域内从事生产、经营活动的单位和个人，均应当依法缴纳地方教育附加。

[illegible][illegible]

... ..

$\frac{d}{dt} \left( \frac{\partial L}{\partial \dot{x}} \right) = \frac{\partial L}{\partial x}$

[illegible][illegible][illegible][illegible]

वयणं तु समभिरूढं शारयकम्मस्स वंधगो जइया ।

तइया सो शेरइओ शारयकम्मेण संजुत्तो ॥५॥

शारयगहं संपत्तो जइया अणुह्वइ शारयं दुक्खं ।

तइया सो शेरइओ एवंभूदो णओ भणदि ॥६॥

अर्थ—किसी मनुष्य को पापी जीवों का समागम करते हुए देखकर नैगम नय से कहा जाता है कि यह पुरुष नारकी है । [जब वह मनुष्य प्राणिवध करने का विचार कर सामग्री का संग्रह करता है तब वह संग्रह नय से नारकी है ।] जब कोई मनुष्य हाथ में वनस्पति और वाण लिये मृगों की खोज में भटकता फिरता है तब वह व्यवहार नय से नारकी कहलाता है । जब आघात-स्थान पर बैठकर पापी, मृगों पर आघात करता है तब वह शत्रुमृत्यु नय से नारकी है । जब जन्तु प्राणियों से विमुक्त कर दिया जाय तभी वह आघात करने वाला, हिंसा कर्म से संयुक्त मनुष्य, शब्द नय से नारकी है । जब मनुष्य नारक कर्म का बंधक होकर नारक कर्म से संयुक्त हो जाय तब वह समभिरूढ नय से नारकी है । जब वही मनुष्य नारक गति को पहुँच कर नारक के दुःख अनुभव करने लगता है तब वह एवंभूत नय से नारकी है ।

शुद्धाशुद्धनिश्चयो द्रव्यार्थिकस्य भेदो ॥२०३॥

सूत्रार्थ—शुद्धनिश्चय नय और अशुद्धनिश्चय नय ये दोनों द्रव्यार्थिक नय के भेद हैं ।

निश्चयनय का लक्षण —

अभेदानुपचारितया वस्तुनिश्चीयत इति निश्चयः ॥२०४॥

सूत्रार्थ—अभेद और अनुपचारिता में जो नय वस्तु का निश्चय करे वह निश्चय नय है ।

विशेषार्थ—गुण-गुणी पर्याय-पर्यायी का भेद अथवा द्रव्य में पर्याय या गुण-भेद निश्चय नय का विषय नहीं है, जैसा कि मम्मयार माया ६ न ७ में कहा गया है । अन्य द्रव्य के सम्बन्ध में द्रव्य में व्यवस्थित होने वाले भाग

이것이 바로 우리 민족의 전통적인 문화이다. 이 문화는 우리 민족의 정체성을 형성하고, 우리의 삶을 지탱해 주는 중요한 요소이다. 이 문화는 우리 민족의 역사와 문화를 통해 형성된 것으로, 우리의 삶에 깊이 뿌리박혀 있다.

이 문화는 우리 민족의 전통적인 가치관과 윤리를 담고 있다. 이 문화는 우리 민족의 삶에 깊이 뿌리박혀 있으며, 우리의 삶에 중요한 역할을 하고 있다. 이 문화는 우리 민족의 역사와 문화를 통해 형성된 것으로, 우리의 삶에 깊이 뿌리박혀 있다.

이 문화는 우리 민족의 전통적인 가치관과 윤리를 담고 있다. 이 문화는 우리 민족의 삶에 깊이 뿌리박혀 있으며, 우리의 삶에 중요한 역할을 하고 있다. 이 문화는 우리 민족의 역사와 문화를 통해 형성된 것으로, 우리의 삶에 깊이 뿌리박혀 있다.

이 문화는 우리 민족의 전통적인 가치관과 윤리를 담고 있다. 이 문화는 우리 민족의 삶에 깊이 뿌리박혀 있으며, 우리의 삶에 중요한 역할을 하고 있다. 이 문화는 우리 민족의 역사와 문화를 통해 형성된 것으로, 우리의 삶에 깊이 뿌리박혀 있다.

이 문화는 우리 민족의 전통적인 가치관과 윤리를 담고 있다. 이 문화는 우리 민족의 삶에 깊이 뿌리박혀 있으며, 우리의 삶에 중요한 역할을 하고 있다. 이 문화는 우리 민족의 역사와 문화를 통해 형성된 것으로, 우리의 삶에 깊이 뿌리박혀 있다.

이 문화는 우리 민족의 전통적인 가치관과 윤리를 담고 있다. 이 문화는 우리 민족의 삶에 깊이 뿌리박혀 있으며, 우리의 삶에 중요한 역할을 하고 있다. 이 문화는 우리 민족의 역사와 문화를 통해 형성된 것으로, 우리의 삶에 깊이 뿌리박혀 있다.

이 문화는 우리 민족의 전통적인 가치관과 윤리를 담고 있다. 이 문화는 우리 민족의 삶에 깊이 뿌리박혀 있으며, 우리의 삶에 중요한 역할을 하고 있다. 이 문화는 우리 민족의 역사와 문화를 통해 형성된 것으로, 우리의 삶에 깊이 뿌리박혀 있다.

이 문화는 우리 민족의 전통적인 가치관과 윤리를 담고 있다. 이 문화는 우리 민족의 삶에 깊이 뿌리박혀 있으며, 우리의 삶에 중요한 역할을 하고 있다. 이 문화는 우리 민족의 역사와 문화를 통해 형성된 것으로, 우리의 삶에 깊이 뿌리박혀 있다.

이 문화는 우리 민족의 전통적인 가치관과 윤리를 담고 있다. 이 문화는 우리 민족의 삶에 깊이 뿌리박혀 있으며, 우리의 삶에 중요한 역할을 하고 있다. 이 문화는 우리 민족의 역사와 문화를 통해 형성된 것으로, 우리의 삶에 깊이 뿌리박혀 있다.



चूने में मिह का उपचार नहीं किया जाता है ।

टिप्पण अनुसार—यदि यहां कोई प्रश्न करे कि उपचार नय पृथक् क्यों कहा गया, यह तो व्यवहारनय का ही भेद है उमानिये व्यवहारनय का ही कथन करना चाहिये था—तो इसका उत्तर दिया जाता है कि उपचार के कथन बिना, किसी भी एक कार्य की गिद्धि नहीं होती । जहाँ पर मुख्य वस्तु का अभाव हो, वहाँ पर प्रयोजन या निमित्त के उपलब्ध होने पर उपचार की प्रवृत्ति की जाती है । वह उपचार भी सम्बन्ध के बिना नहीं होता । इस प्रकार उपचरित असद्भूत व्यवहार नय की प्रवृत्ति होती है । इसलिये उपचरित नय भिन्न रूप से कही गई है । सूत्र ४४ के विशेषार्थ में भी इस नय का कथन है । इसके भेदों का कथन सूत्र ८८ से ९१ तक है ।

सम्बन्ध का कथन—

सोऽपि सम्बन्धोऽविनाभावः, संश्लेषः सम्बन्धः, परिणाम-परिणामिसम्बन्धः, श्रद्धाश्रद्धेयसम्बन्धः, ज्ञानज्ञेयसम्बन्धः, चारित्रचर्यासम्बन्धश्चेत्यादि, सत्यार्थः असत्यार्थः सत्यासत्यार्थ-श्चेत्युपचरितासद्भूतव्यवहारनयस्यार्थः ॥२१३॥

सूत्रार्थ—वह सम्बन्ध भी सत्यार्थ अर्थात् स्वजाति पदार्थों में, असत्यार्थ अर्थात् विजाति पदार्थों में तथा सत्यासत्यार्थ अर्थात् स्वजाति-विजाति, उभय पदार्थों में निम्न प्रकार का होता है—१. अविनाभावसम्बन्ध, २. संश्लेष सम्बन्ध, ३. परिणामपरिणामिसम्बन्ध, ४. श्रद्धाश्रद्धेयसम्बन्ध, ५. ज्ञानज्ञेय-सम्बन्ध, ६. चारित्रचर्या सम्बन्ध इत्यादि ।

विशेषार्थ—इस नय का कथन सूत्र ८८ में भी है । इत्यादि से निमित्त नैमित्तिक सम्बन्ध, स्वस्वामी सम्बन्ध, वाच्य-वाचक सम्बन्ध, प्रमाण-प्रमेय सम्बन्ध, बंध्य-बंधक सम्बन्ध, वद्धय-घातक सम्बन्ध आदि को भी ग्रहण कर लेना चाहिये । ये सम्बन्ध यथार्थ हैं । यदि इनको यथार्थ न माना जाये तो संसार का, मोक्ष का, मोक्ष-मार्ग का, ज्ञान का और ज्ञेयों का, प्रमाण और प्रमेयों अर्थात् द्रव्यों का भी अभाव हो जायगा । सर्वज्ञ का भी अभाव हो

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

# परिशिष्ट-२

## अर्थक्रियाकारित्व

“अनुवृत्तान्यानुत्तप्रत्ययगोचरत्वात्पूर्वोत्तराकारपरिद्धारा वाप्तिस्थिति-  
लक्षणपरिणामेनार्थक्रियोपपत्तेश्च ।”

वस्तु अनुवृत्त (सामान्य धरणा गुण) और व्यावृत्त (पर्याय) रूप से  
दिखाई देती है तथा पूर्ण पर्याय का परिहार (नाश) और स्थिति (धोव्य)  
रूप परिणामन से अर्थक्रिया की उत्पत्ति होती है ।

अर्थक्रियाविरोधादिति = कार्यकर्तृत्वायोगात्

सामान्य-विरोधात्मक वस्तु में उत्पाद, व्यय, धोव्य रूप अर्थक्रिया  
होती है ।

‘त्रिलक्षणाभावतः अवस्तुनि परिच्छेदलक्षणार्थ क्रियाभावात् ।’

उत्पाद, व्यय और धोव्य रूप लक्षणयय का अभाव होने के कारण  
अवस्तु स्वरूप जो ज्ञान उसमें परिच्छिन्न रूप अर्थक्रिया का अभाव है । जैसे-  
जैसे जैयों में उत्पाद, व्यय, धोव्य रूप परिणामन होता है उस ही के अनुसार ज्ञान  
में भी जानने की अपेक्षा उत्पाद, व्यय, धोव्य होता रहता है । जो पर्याय प्रति-  
क्षण उत्पन्न होती है उस पर्याय को ज्ञान सद्भाव रूप से जानता है । जो  
उत्पन्न होकर विनष्ट हो चुकी हैं या अनुत्पन्न हैं उनकी अभाव रूप से जानता  
है, अन्यथा जैयों के अनुकूल ज्ञान में परिणामन नहीं बन सकता ।

स्वामिकार्तिकेयानुपेक्षा में भी कहा है—

जं वत्थु अण्णेतं तं चिय कज्जं करेदि णियमेण ।

बहुधम्मजुदं अत्थं कज्जकरं दीसदे लोए ॥ २२५ ॥

एयंतं पुण्ण दव्वं कज्जं ण करेदि लेसमेत्तं पि ।

जे पुण्ण ण करदि कज्जं तं वुच्चदि केरिसं दव्वं ॥ २२६ ॥

१. श्लोकवार्तिक भाग ६ पृ० ३५६ । २. प्रमेयरत्नमाला पृ० २६४ ।

३. धवल पु० ६ पृ० १४२ । ४. धवल पु० १ पृ० १६८ ।







भेदात्मक मानने पर जगत्का अनायास्य याद्वार से निरन्तर नहीं किया जा सकता, अतः संशय दोष जाता है ॥६॥ संशय होने से जगत्का ठीक ज्ञान नहीं हो जाता, अतः अमतिवृत्ति नामक दोष जाता है ॥७॥ ठीक प्रतिपत्ति के न होने से अमान नाम का दोष भी जाता है ॥८॥

निरपेक्ष, एतान्त दृष्टि में ये आठों दोष सम्भव हैं । सापेक्ष, अनेकान्त दृष्टि में इन आठ दोषों में से एक दोष भी सम्भव नहीं है ।

जो गुण और गुणी (द्रव्य) में सर्वथा भेद मानते हैं, उनके मत में उपर्युक्त आठों दोष सम्भव हैं, जो गुण और गुणी का सर्वथा अभेद मानते हैं, उनके मत में उपर्युक्त आठों दोष सम्भव हैं तथा जो भेद और अभेद को परस्पर सापेक्ष नहीं मानते हैं उनके मत में भी उपर्युक्त आठों दोष सम्भव हैं । किन्तु, भेद और अभेद को सापेक्ष मानने वाले स्याद्वादियों के मत में उक्त आठ दोष सम्भव नहीं हैं क्योंकि, वस्तुस्वरूप अनेकान्तात्मक है ।



attending a radio show with

25

757

۱۰۰  
 ۱۰۱

一、二、三、四、五、六、七、八、九、十、十一、十二、十三、十四、十五、十六、十七、十八、十九、二十、二十一、二十二、二十三、二十四、二十五、二十六、二十七、二十八、二十九、三十、三十一、三十二、三十三、三十四、三十五、三十六、三十七、三十八、三十九、四十、四十一、四十二、四十三、四十四、四十五、四十六、四十七、四十八、四十九、五十、五十一、五十二、五十三、五十四、五十五、五十六、五十七、五十八、五十九、六十、六十一、六十二、六十三、六十四、六十五、六十六、六十七、六十八、六十九、七十、七十一、七十二、七十三、七十四、七十五、七十六、七十七、七十八、七十九、八十、八十一、八十二、八十三、八十四、八十五、八十六、八十七、八十八、八十九、九十、九十一、九十二、九十三、九十四、九十五、九十六、九十七、九十八、九十九、一百。

中 外 史

新、旧、今、古、東、西、南、北

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

अथर्ववेदः

[illegible]

424 2011

44 45

第 3 卷 第 4 期

[illegible]

00 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 104

[illegible]

የጥቅም ላይ የዋለው የሰነድ ቁጥር፡ 98

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840.

$\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

224

Figure 1

4237

$\frac{1}{2} \text{ g}$

2

$$3 \times 10^4 = 30,000$$

1993

[illegible]

44. 45. 46. 47.

97-1-2-3-4-5-6

[illegible]

附錄一

[illegible]

2010年12月15日

434

[illegible][illegible]

$\frac{d}{dt} \left( \frac{\partial L}{\partial \dot{x}} \right) = \frac{\partial L}{\partial x}$

1. 2. 3.

$$m = \frac{1}{2} \left( \frac{1}{f} + \frac{1}{f'} \right) \quad \text{and} \quad \frac{1}{f} = \frac{1}{f'} + \frac{1}{f''}$$
[illegible]

$\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

222

Figure 1

1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 26

... 1940 ...

2. 3

$\frac{1}{2}$ 
 $\frac{1}{3}$ 
 $\frac{1}{4}$ 
 $\frac{1}{5}$ 
 $\frac{1}{6}$ 
 $\frac{1}{7}$ 
 $\frac{1}{8}$ 
 $\frac{1}{9}$ 
 $\frac{1}{10}$ 
 $\frac{1}{11}$ 
 $\frac{1}{12}$ 
 $\frac{1}{13}$ 
 $\frac{1}{14}$ 
 $\frac{1}{15}$ 
 $\frac{1}{16}$ 
 $\frac{1}{17}$ 
 $\frac{1}{18}$ 
 $\frac{1}{19}$ 
 $\frac{1}{20}$ 
 $\frac{1}{21}$ 
 $\frac{1}{22}$ 
 $\frac{1}{23}$ 
 $\frac{1}{24}$ 
 $\frac{1}{25}$ 
 $\frac{1}{26}$ 
 $\frac{1}{27}$ 
 $\frac{1}{28}$ 
 $\frac{1}{29}$ 
 $\frac{1}{30}$ 
 $\frac{1}{31}$ 
 $\frac{1}{32}$ 
 $\frac{1}{33}$ 
 $\frac{1}{34}$ 
 $\frac{1}{35}$ 
 $\frac{1}{36}$ 
 $\frac{1}{37}$ 
 $\frac{1}{38}$ 
 $\frac{1}{39}$ 
 $\frac{1}{40}$ 
 $\frac{1}{41}$ 
 $\frac{1}{42}$ 
 $\frac{1}{43}$ 
 $\frac{1}{44}$ 
 $\frac{1}{45}$ 
 $\frac{1}{46}$ 
 $\frac{1}{47}$ 
 $\frac{1}{48}$ 
 $\frac{1}{49}$ 
 $\frac{1}{50}$ 
 $\frac{1}{51}$ 
 $\frac{1}{52}$ 
 $\frac{1}{53}$ 
 $\frac{1}{54}$ 
 $\frac{1}{55}$ 
 $\frac{1}{56}$ 
 $\frac{1}{57}$ 
 $\frac{1}{58}$ 
 $\frac{1}{59}$ 
 $\frac{1}{60}$ 
 $\frac{1}{61}$ 
 $\frac{1}{62}$ 
 $\frac{1}{63}$ 
 $\frac{1}{64}$ 
 $\frac{1}{65}$ 
 $\frac{1}{66}$ 
 $\frac{1}{67}$ 
 $\frac{1}{68}$ 
 $\frac{1}{69}$ 
 $\frac{1}{70}$ 
 $\frac{1}{71}$ 
 $\frac{1}{72}$ 
 $\frac{1}{73}$ 
 $\frac{1}{74}$ 
 $\frac{1}{75}$ 
 $\frac{1}{76}$ 
 $\frac{1}{77}$ 
 $\frac{1}{78}$ 
 $\frac{1}{79}$ 
 $\frac{1}{80}$ 
 $\frac{1}{81}$ 
 $\frac{1}{82}$ 
 $\frac{1}{83}$ 
 $\frac{1}{84}$ 
 $\frac{1}{85}$ 
 $\frac{1}{86}$ 
 $\frac{1}{87}$ 
 $\frac{1}{88}$ 
 $\frac{1}{89}$ 
 $\frac{1}{90}$ 
 $\frac{1}{91}$ 
 $\frac{1}{92}$ 
 $\frac{1}{93}$ 
 $\frac{1}{94}$ 
 $\frac{1}{95}$ 
 $\frac{1}{96}$ 
 $\frac{1}{97}$ 
 $\frac{1}{98}$ 
 $\frac{1}{99}$ 
 $\frac{1}{100}$

[illegible]



|                                |  |
|--------------------------------|--|
| मादित्वा स्वभाव                | ७, ८, १८, ७७, ७३, ७४, १४८, १६८                                 |
| नित्य स्वभाव                   | ७, ८, १८, २५, ७३, ७४, १५०, १५८, १६८                            |
| निविरण्य नय                    | २८, १८१  |
| निविरण्य प्रमाण                | २८, १७८, १८०   |
| निरण्य नय                      | १०, २१, २४, ८३, १८०, १८८, १८९, २००                             |
| निर्णय                         | २८, १८२  |
| नीगम नय                        | ११, १३, १४, ३०, ८५, ११८, ११९, १२०, १२१, १८७                    |
| नोकर्म                         | १७१, १७२, १७३  |
| परदर्शक                        | ८, २१, ७५  |
| परद्रव्यादिग्राहक द्रव्याधिकनय | १२, २९, ११०, १८५   |
| परमभावग्राहक द्रव्याधिकनय      | १२, ३०, १११, १८६   |
| परम स्वभाव                     | ७, ८, २०, ७३, ७५   |
| परमाणु                         | ६, ७, १८, ६४, ६५, ६६, ६७, ८१, १७४, १७६                         |
| परज्ञता                        | ८, २१, ७५  |
| पर्याय                         | १, ४, १७, १८, ३६, ५१, ६६, ७०, ७२, १४०, १४१, १४२, १४८, १८६      |
| पर्यायाधिक नय                  | ११, १३, ३०, ७०, ८४, ८५, ११२, ११३, ११४, ११५, ११६, ११७, ११८, १८६ |
| परिणाम-परिणामि सम्बन्ध         | ३४, १८६  |
| परोक्ष                         | ८२, ८३   |
| पारिणामिक भाव                  | २०, १५४  |
| पुद्गल                         | २, ३, ८, ४१, ६६, ७१, ७६, १७७                                   |
| प्रत्यक्ष                      | ८२   |
| प्रदेशत्व                      | २, १८, ४५, १४५   |
| प्रमाण                         | १०, १५, २८, ८१, ८२, १६८, १७८                                   |
| प्रमेयत्व                      | २, १७, १८, ४४, १४३   |
| भव्य स्वभाव                    | ७, ८, २०, २३, २६, ७३, ७५, १५२, १६१, १६३, १७१                   |

卷之六

卷之六  
卷之六  
卷之六  
卷之六

卷之六  
卷之六  
卷之六  
卷之六  
卷之六  
卷之六  
卷之六  
卷之六  
卷之六  
卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

卷之六

व्यवहार नय

१०, ११, १५, ३१, ३४, ३७, ६३, ६६,  
१०३, १२४, १२५, १२६, १३१, १८८, १९१,  
१९८, १९९, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५,  
२०६, २०७, २०८

व्यंजन पर्याय

४, ५, ६, ५२, ५६, ६६, ७१, १२८

शब्द नय

११, १५, ३१, ६६, १२८, १८८

शुद्धद्रव्याधिक नय

११, २७, २९, १०५, १०६, १८४

शुद्धनिश्चय नय

३४, १९९, २००, २०१, २०२

शुद्धपर्यायाधिक नय

१३, ३०, ११६, ११७, १७८, १८७

शुद्धसदभूतव्यवहार नय

१६, १३१

शुद्ध स्वभाव

७, ९, २१, २५, २७, ७३, ७५, १५५, १  
१७८

यद्वाश्रद्धेय सम्बन्ध

३४, १९६

श्रुतज्ञान

८३, ९१, ९२, १८०

सत्

२, १७, २२, ४२, १४३, १५८

सदभूतव्यवहार नय

११, १६, २६, ३१, ३२, ३४, १०३, १३१

१९१, १९२, २०२, २०३, २०४

११, १५, ३१, १००, १०१, १२८, १८९

१९६

२४, १६४, १६५

७५

२८, १८१

२८, १७९, १८०

२३, १६०

२, ४

७, ७३, १४१

६, ९, ११, १३, १४, ६१, ६२

३, ४८, ५०, ६२

२२, १५८

समभिरूढ नय

सम्बन्ध

सर्वथा

सर्वज्ञ

सर्विकल्प नय

सर्विकल्प प्रमाण

सामान्य

सामान्य गुण

सामान्य स्वभाव

निष्ठ

मुक्त

संकरदोष

१३५५

野、山、水、竹、石、花、鳥、蟲、魚、草、木、人、物、

1999

2000

[illegible][illegible]

2. 10. 1941

Figure 1

2014

255

27

1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 26

9-25-20

25

[illegible]

1. 凡在本行开立存款账户的客户，均可向本行申请开立支票。

一、政治思想  
 二、道德品质  
 三、文化知识  
 四、身体条件  
 五、其他

[illegible]

西曆一千九百一十一年一月一日  
 中華民國十年一月一日

姓名: 王 强 性别: 男 年龄: 25 籍贯: 山东 职业: 教师

多美、多美、多美、多美

1947年 1月 1日

新刊本：一、二、三、四、五、六、七、八、九、十、十一、十二、十三、十四、十五、十六、十七、十八、十九、二十、二十一、二十二、二十三、二十四、二十五、二十六、二十七、二十八、二十九、三十、三十一、三十二、三十三、三十四、三十五、三十六、三十七、三十八、三十九、四十、四十一、四十二、四十三、四十四、四十五、四十六、四十七、四十八、四十九、五十、五十一、五十二、五十三、五十四、五十五、五十六、五十七、五十八、五十九、六十、六十一、六十二、六十三、六十四、六十五、六十六、六十七、六十八、六十九、七十、七十一、七十二、七十三、七十四、七十五、七十六、七十七、七十八、七十九、八十、八十一、八十二、八十三、八十四、八十五、八十六、八十七、八十八、八十九、九十、九十一、九十二、九十三、九十四、九十五、九十六、九十七、九十八、九十九、一百。

한글: 1994년 12월 14일, 서울특별시 강남구 테헤란로 12-1, 서울대학교 경영대학 경영학부

Figure 1. The effect of the concentration of the *Agaricus bisporus* spores on the growth of *Agaricus bisporus* on the substrate.

$\frac{d}{dt} \left( \frac{\partial L}{\partial \dot{x}} \right) = \frac{\partial L}{\partial x}$

# शुद्धि-पत्र

पृष्ठ पंक्ति अशुद्ध

३ ४ नास्ति ।

५ ५ सन्यातभाग

६ ३ ध्वंसीपर्याय

६ १५ वभाव

६ १८ ...रसैकैका...

८ ३ पृथक्

८ १८ पर्यायैः

८ २६ गंधवर्ण

९ ९ स्वभावः

१० १२ स्थितः

१४ ७ ज्ञानोत्पात्त

१५ ९ स्तदायुः प्रमाण

१५ १२ मेकैके नयाः

१५ १७ एवं भूत

१८ २० स्पर्शवत्त्वं

१९ १९ नेक स्वभावः

२० ३ चतुर्मिप्राणैः

२० ४ अजीवतिति

२० ६ च्छिति मात्र

२५ ५ प्रसङ्गः

२८ ४ तद्वेधा

२८ ६ वस्तुमंगुही

२८ २२ गाहा

शुद्ध

नास्ति । यर्माधर्माकाशकाल-  
द्रव्येषु चेतनत्वं मूर्तत्वं च नास्ति ।

सन्यातभाग

ध्वंसी पर्याय

विभाव

...रसैकैका...

पृथक्

पर्यायैः

गंधवर्ण

स्वभावाः

स्थिताः

ज्ञानोत्पत्ति

स्तदायुःप्रमाण

मेकैका नयाः

एवंभूत

स्पर्शवत्त्वं

नेकस्वभावः

चतुर्मिः प्राणैः

अजीवदिति

च्छितिमात्र

प्रसङ्गः स्यात्

तद्वेधा

वस्तु मंगुही

गाया



|                     |                |
|---------------------|----------------|
| ७२ २३ ५/ ८          | ५/ ३८          |
| ७६ २५ तरत्तस्या     | तरत्तस्मा      |
| ८० २० कायाधर्मा     | काया धर्मा     |
| ८० २६ परमाणु        | परमाणु         |
| १०८ २३ गुणगुणियईण   | गुणगुणियाईण    |
| १०६ ३ द्रव्याधिको   | द्रव्याधिको    |
| १०६ ८ रूवेण         | रूवेण          |
| १११ २५ गिहणइ        | गिह्णइ         |
| ११२ २४ गिहणइ        | गिह्णइ         |
| ११५ १० गिह्णए       | गिह्णए         |
| ११६ ८ अमुद्धओ       | अमुद्धओ        |
| १२२ हेडिग [सूत्र ६८ | [सूत्र ६८      |
| १२५ १० जलाकार       | जालकार         |
| १२८ १४ जीवपुद्गला   | जीवपुद्गला     |
| १२६ २३ भणिओ पुस्ता  | भणिओ ओओ पुस्ता |
| १४४ हेडिग [सूत्र ६६ | [सूत्र ६६      |
| १५७ १४ दा           | दो             |
| १७२ १८ शरीर है ।    | शरीर जीव है ।  |
| १७६ २ वयोऽपि        | नयोऽपि         |
| १८४ १६ वध           | बंध            |
| १८४ २१ पचास्तिकाम   | पंचास्तिकाय    |
| १८६ १६ अनादि, नित्य | अनादि-नित्य    |
| १६१ २० लाप          | लोप            |
| १६२ ६ धमस्या        | धर्मस्या       |

नोट (१)—पृ० १७२ सूत्र १६० की टीका में यह जोड़ना चाहिये—

‘अनन्तानन्त विमलसोपचय सहित कर्मपुद्गलस्कंध कयंचित् जीव  
 क्योंकि वह जीव से पृथक् नहीं पाया जाता है [ध्वज पु० १२ पृ० २६६  
 ‘आद्येय में आधार का उपचार करने से परमाणु की जीवप्रदेश संज्ञा







